आत्मकथा

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी०ए० ऑनर्स, एम०ए०

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

संस्करण : 2018
प्रतियाँ : 1000

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

टंकण एवं साजसज्जा : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. 94683 40497, 81684 90221**
मुद्रक : **यू०आर०बी० प्रिंटिंग प्रैस, शैड नं. 2, रतपुर कॉलोनी, पिंजौर,**
मो. 9466111730, 9466112730

दो शब्द

जीवन उन्हीं का धन्य है, जीते हैं जो सबके लिये।
धिक्कार है उनके लिए जीते हैं जो अपने लिये।।
जन्म होता है, सुजन का, विश्व के उद्धार को।
विश्व सेवा, विश्व मंगल, विश्व के उपकार को।।

—स्वामी विद्यानंद 'विदेह'

भद्र आत्माओ!

वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति के जीने का ढंग पृथक्-पृथक् होता है। यहाँ तक कि दो जुड़वें भाई भी आपस में नहीं मिलते। प्रभु के अतिरिक्त संसार का कोई भी व्यक्ति किसी व्यक्ति को पूर्णतः नहीं जान सकता है। तभी कहा गया है : —

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों को खाता।
जैसे कोई कर्म करेगा, वैसा ही फल पाता।।

आगे निवेदन है कि व्यक्ति के विषय में उसकी संगति और वह जिन ग्रंथों का अध्ययन एवं अनुशीलन करता है उसके जीवन के विषय में कुछ सीमा तक जाना जा सकता है। वस्तुतः मेरी ब्रह्मलीन माता जी की प्रबल इच्छा थी कि वे अपनी आत्मकथा लिखें। परन्तु वे अँगूठा छाप थीं इसलिए यह कार्य नहीं कर सकी। वे मुझे कहा करती थीं—

बेटा! यदि मैं पढ़ी लिखी होती तो मैं अपनी आत्मकथा अवश्य लिखती।

परन्तु आज मैंने अपनी आत्मकथा लिखकर उनकी इच्छा को पूर्ण करने का प्रयास किया है। इस आत्मकथा में मैंने अपने जन्म एवं बचपन, शिक्षा, वंशपरिचय, नौकरी, मित्रपरिचय, सेवानिवृत्ति, आदरणीया माता जी को धार्मिक ग्रंथों का श्रवण, विभिन्न ग्रंथों की रचना, दिनचर्या आदि का संक्षिप्त एवं वास्तविक वर्णन किया है। वस्तुतः कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं होता। अतः मैंने अपने गुण-दोषों का भी उल्लेख किया है। कोई भी रहस्य छिपाने का प्रयत्न नहीं किया है। जैसे मेरे मित्रगण जानते हैं कि मैं स्पष्ट वक्ता हूँ। अतः

जो भी बात होती है मैं साफ-साफ कह देता हूँ। वस्तुतः मैं मन, वचन और कर्म से एक हूँ। मेरी करनी, कथनी, चर्या, चर्चा , उच्चारण और आचरण में समानता है।

प्रस्तुत पुस्तक को लिखने में मुझे सर्वश्री लालचंद जी चौहान, सरदारी लाल जी धवन, रोशन लाल अग्रवाल जी, जय किशन जी, नरेश बंसल जी आदि ने सहयोग प्रदान किया है। अतः मैं इन सबके सहयोग के लिए अत्यंत कृतज्ञ हूँ। इसके अतिरिक्त मैं उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्ताओं का भी अत्यंत धन्यवादी हूँ, जिनकी कृतियों से संदर्भ उद्धृत किये गये हैं। वस्तुतः बोलना सरल है परन्तु लिखना अत्यधिक कठिन है जैसे कि संस्कृत में एक उक्ति है–

शतं वदं एकं मा लिख

अर्थात् सौ बार कहो परन्तु एक बार भी मत लिखो। क्योंकि लेखन में यदि कोई त्रुटि रह गई तो लेखक की पोल खुल जाती है।

मैंने प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में पूर्ण सावधानी बरती है। परन्तु संसार का प्रत्येक व्यक्ति अल्पज्ञ और अपूर्ण है। अतः यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकगण से क्षमा चाहूँगा।

धर्म पाल कपूर

दिनांक : 20.05.2018

(**धर्मपाल कपूर**)
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

निवेदन

आदर्श व्यक्तित्व की आत्मकथा

श्री धर्मपाल कपूर जी की आत्मकथा को पढ़ने से उनके व्यक्तित्व के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई । वैसे तो मेरा कई वर्षों से उनसे मिलन व वार्तालाप होता रहता है, परन्तु उनके व्यक्तित्व व जीवन के विषय में इतनी जानकारी नहीं थी। उनका जीवन बचपन से लेकर अब तक बड़ा ही संघर्षमय रहा है, जैसा कि उनके द्वारा अपनी आत्मकथा में वर्णन किया हैं बचपन से ही उनकी विचारधारा एवं गतिविधियाँ धार्मिक प्रवृत्ति की रही हैं ।

उन्होंने अपने जीवन में कठिन परिश्रम, पुरुषार्थ और इमानदारी से कार्य किया हैं इनके अन्दर प्रेमभाव कूट-कूट कर भरा हुआ है । बड़ी परोपकारी भावना, दूसरों के प्रति दया, करुणा और उनके दर्द पीड़ा को समझ कर उनकी आर्थिक सहायता करना बड़ा ही परोपकार व पुण्य का कार्य है, यह एक साधारण व्यक्तित्व का व्यक्ति नहीं कर सकता। ये कार्य पुण्य आत्माएं जिनके ऊपर परमपिता परमात्मा की असीम कृपा होती है, वही कर सकते हैं । श्री धर्मपाल कपूर जी के ऊपर परमात्मा की महती कृपा है । उसकी कृपा के बिना मनुष्य में ये सब करने की सामर्थ्य नहीं है ।

विगत वर्षों से वैदिक सिद्धान्तों (आर्य मान्यताओं) पर आधारित धर्म, संस्कृति एवं इतिहास से सम्बद्ध पुस्तकों को लिखना, उनका प्रकाशन करवाना और निःशुल्क उनका वितरण करना । यहाँ तक कि अपने खर्चे पर पुस्तकों को श्रद्धालुओं व आर्यसमाजों को भेजना, अति सराहनीय कार्य हैं कहावत हे जो दूसरों के काम आये, उसे इन्सान कहते हैं ।

श्री धर्मपाल कपूर जी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं । धार्मिक प्रवृत्ति क्या है? इसके लिये पहले धर्म की परिभाषा को समझना अति आवश्यक है, तभी धार्मिकता का पता चल पायगा। धर्म-व्याकरण की दृष्टि से 'धृञ्-धरणे' धातु से अर्तिस्तु सुहुसृधृ० (उणादि 1/140) सूत्र से प्राप्त 'मन्' प्रत्यय के योग से 'धर्म' शब्द सिद्ध होता है । मनुस्मृति में धर्म के मनु महाराज ने अर्थ किये हैं । मुख्य अर्थ (आध्यात्मिक उद्देश्य साधक) दूसरा गौण अर्थ (लौकिक व्यवहार साधक)

(1) आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा के उपकारक निःश्रेयससिद्धि, मोक्ष

प्राप्त करने वाले आचरण को धर्म कहते हैं ।

(2) व्यावहारिक क्षेत्र में त्रिविध = आत्मिक, मानसिक, उन्नति कराने वाले, मानवत्व और देवत्व का विकास करने वाले, उत्तम सुखसाधक, श्रेष्ठ व्यावहारिक कर्त्तव्य, मर्यादाएँ और विधान (कानून) धर्म कहलाते हैं ।

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः {वैशेषिक दर्शन 1/1/2}

जिसके आचरण से मनुष्य की त्रिविध = आत्मिक, मानसिक व शारीरिक उन्नति और व्यावहारिक उत्तम सुख की प्राप्ति एवं वृद्धि हो तथा मोक्षसुख की सिद्धि हो यह आचरण व कर्त्तव्य धर्म है । उक्त की पालना करने वाला व्यक्ति ही धर्मात्मा हो सकता है, उक्त गुण काफी मात्रा में श्री धर्मपाल कपूर जी में प्रदर्शित होते हैं । इन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपना हौसला नहीं छोड़ा और निरन्तर परिश्रम, पुरुषार्थ करते रहे हैं । श्री कपूर जी की आध्यात्मिक विषयों में बड़ी रुचि है, वे स्वाध्यायशील हैं और लेखन व प्रकाशन के कार्य में अपनी अधिक शक्ति व समय व्यतीत करते हैं । आध्यात्मिक विषयों पर भी पुस्तकें लिखी हैं, इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें, महापुरुषों की जीवनियाँ आदि का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण, सराहनीय व परोपकार का कार्य किया हैं विद्या का दान सब से उत्तम दान है । इससे बहुत से लोगों का जीवन सुधर जाता है । बुराइयों से मनुष्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन करने से बच जाता हैं श्री कपूर में आत्मिक उन्नति व व्यावहारिक जगत् में उन्नति के लिए 48 पुस्तकें लिखी हैं । जिनमें से 17 प्रकाशित हो चुकी हैं । और 31 पर कार्य चल रहा है । यह कार्य एक साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता । यह कार्य ईश्वर की असीम कृपा से कोई महान् आत्मा ही कर सकती है ।

श्री कपूर जी की सोच बड़ी उच्चकोटि की है कि उन्होंने शादी के प्रस्ताव को देश हितार्थ ठुकरा दिया । यह कार्य आसान नहीं है । मनुष्य का काम, क्रोध, लोभ, मोह चारों ओर से जकड़े रखता है, परन्तु श्री कपूर ने इन पर काफी सीमा तक नियंत्रण किया है क्योंकि पूर्णनियंत्रण करने वाला तो एक योगी ही हो सकता है, जिसने सब कुछ त्याग कर ईश्वर को अपने आपको समर्पित कर दिया हो ।

स्वानि कर्माणि कुर्वाणा दूरे सन्तोऽपि मानवाः ।

प्रिया भवंति लोकस्य स्वे स्वे कर्मव्यवस्थिताः । । मनु० 8/42

जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं वे दूर रहते हुए भी लोगों में प्रिय हो जाते हैं । क्योंकि वे अपने कर्त्तप्य में स्थित हैं ।

मनुष्य सारे जीवन हर क्षण कर्म करता रहता है । वह बिना कर्म किये रह ही नहीं सकता । कर्म मुख्यतः दो प्रकार के हैं । पुण्य कर्म और पाप कर्म । जो पुण्य कर्म करता है, वह पुण्यात्मा कहलाता है और जो पाप कर्म करता है वह पापात्मा कहलाता है । पुण्य का फल सुख और पाप का फल दुःख मिलता है, यह परमात्मा का न्याय है । वह न्यायकारी है, सबको यथावत् कर्मों का फल देता है । इसलिये मनुष्य को पाप कर्म छोड़ कर पुण्य कर्म ही करने चाहिये, और धर्म का आचरण करना चाहिए उनके जीवन से शिक्षा लेनी चाहिये । श्री कपूर जी के जीवन की बहुत सी घटनाएं बड़ी प्रेरणादायक हैं, शिक्षाप्रद हैं । उन्होंने अपने जीवन में एक प्रकार का यह तप किया है । मैं तो इसे तप-त्याग ही कहूँगा । मुझे उनकी कई पुस्तकों का प्ररूफ शोधन का सौभाग्य प्राप्त हुआ । ऐसे धर्म परायण महापुरुषों के कार्य में सहयोग देना भी ईश्वर कृपा से या ईश्वर की शक्ति से ही कर पाना सम्भव होता है । मैं उनकी दीर्घायु व पूर्ण स्वस्थ जीवन की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । सबके धर्म कार्यों में निःस्वार्थ भाव से भाग लेना ही मानव का धर्म है ।

लालचन्द चौहान
से.नि. राज्य विकास अधिकारी
कोठी नं. 591/12, पंचकूला
(हरियाणा)-134112
मो. 8557057170

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और सदुपयोग ही इसका मूल्य है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

विषयसूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	भूमिका	1
2.	जन्म एवं बचपन	1
3.	शिक्षा	4
4.	वंश परिचय	4
5.	नौकरी	10
6.	नौकरी में तरक्की	12
7.	गृहस्थी बनने का असफल प्रयास	15
8.	शैक्षणिक योग्यता में बढ़ोतरी	16
9.	ड्रॉ. में प्लॉट निकलना	18
10.	मित्रपरिचय	18
11.	सेवानिवृत्ति	30
12.	आदरणीया माताजी को धार्मिक ग्रंथों का श्रवण कराना	31
13.	मुख्य प्रवचन	32
14.	विभिन्न ग्रंथों की रचना	61
15.	वैदिक प्रचार हेतु ग्रंथों का निःशुल्क वितरण	65
16.	भाइयों और निर्धनों की आर्थिक सहायता	65
17.	दिनचर्या	66

लेखकवंशवृक्ष

श्री राम गुलाम कपूर (दादा जी)

श्री मदन लाल कपूर
(पिता जी)

श्रीमती बचनी देवी
(माता जी)

श्रीमती दया रानी मल्होत्रा
(बहन जी)

श्री ओम प्रकाश कपूर
(बड़े भाई साहिब)

धर्मपाल कपूर
(लेखक)

श्री सत्यपाल कपूर
(भाई साहिब)

श्री सुरेन्द्र कुमार कपूर
(भाई साहिब)

प्रो० राजेन्द्र कुमार कपूर
(भाई साहिब)

श्री जय प्रकाश कपूर
(भाई साहिब)

धर्मपाल कपूर (लेखक)

प्रो० राजेन्द्र कुमार कपूर (भाई साहिब)

श्रीमती आशा कपूर (भाभी)

श्रीमती पूजा सरवाल (भतीजी)

श्री सत्यपाल मोदी (भूतपूर्व मित्र)

श्री सरदारी लाल धवन 'कमल' (मित्र)

श्री लालचन्द चौहान (मित्र)

आत्मकथा

1. भूमिका

मेरे पूर्वज बताते थे कि आज से लगभग 250 वर्ष पूर्व सर्वश्री गणेश कपूर और महेश कपूर सरहद से बाबा आला के शासन काल में पटियाला आकर बस गये थे। ये दोनों भाई बाबा आला के यहाँ कर्मचारी थे। मैं उनकी 11वीं पीढ़ी का वंशज हूँ। मेरे दादाजी के दादाजी का नाम गोपीचन्द कपूर था और उनके तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे–1. सर्वश्री गंगा राम कपूर, 2. टडूमल कपूर, 3. जगीरी कपूर। इनमें से आदरणीय टडूमल कपूर तो निःसन्तान ही प्रभु को प्यारे हो गये। और जगीरी कपूर का जवानी में ही निधन हो गया। केवल श्री गंगाराम कपूर का वंश चला। कहते हैं कि श्री गंगाराम कपूर के 21 बच्चे हुए थे। परन्तु इनमें से केवल मेरे दादा जी जिनका नाम श्री रामगुलाम कपूर था जीवित रहे। मेरे दादा श्री राम गुलाम कपूर जी का विवाह माया देवी से हुआ जोकि मुरादाबाद की रहने वाली थी। परन्तु दुर्भाग्यवश वह केवल दो बच्चों को एक मेरे ताया जी श्री जय गोपाल कपूर और मेरे पिता जी श्री मदन लाल कपूर को जन्म देकर प्रभु को प्यारी हो गई थी।

2. जन्म एवं बचपन

मेरा जन्म 28-2-1936 ई० को रविवार के दिन गली बिट्ठडा नजदीक आर्य समाज चौक पटियाला (पंजाब राज्य) में श्री मदन लाल कपूर जी के घर हुआ। मेरी माता जी का नाम श्रीमती बचनी देवी कपूर था। हम 9 भाई बहन थे। परन्तु अब केवल 5 भाई –सर्वश्रीओम् प्रकाश कपूर, धर्मपाल कपूर, सुरेन्द्र कपूर, प्रो. राजिन्द्र कुमार कपूर एवं जयप्रकाश कपूर ही रह गये हैं। बचपन से ही मैं बच्चों के साथ बहुत कम खेलता कूदता था और मुझे

एकांत प्रिय था। 1942 ई० में जब मेरी आयु छः वर्ष की थी तभी से मैं आर्य समाज जोकि चौक आर्य समाज पटियाला में है संतों के प्रवचन सुनने के लिये जाया करता था।

इसके अतिरिक्त उस समय वहाँ पर महर्षि दयानंदजी के जीवन से संबंधित मूक चलचित्र भी दिखाया करते थे जोकि बड़े शिक्षाप्रद होते थे। उन्हें देखकर मैं अत्यंत प्रसन्न होता था। बचपन से ही मेरे जीवन में संत क्या आ गये मानो मेरे जीवन में बसंत आ गया हो। जब मैं छोटा बालक था तब भी संसार का कोई वैभव एवं आकर्षण मुझे अपनी ओर नहीं खींच सका था। आदरणीया माता जी भी मुझे, गली के बच्चों और मेरे भाइयों को शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाया करती थीं जोकि मैं बड़े ध्यान से सुनता था। माता जी के शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाने का ढंग इतना अच्छा व प्रभावशाली था कि मैं अब तक भी इस प्रकार नहीं सुना सकता हूँ। यह माता जी को प्रभुप्रदत्त देन थी। इस प्रकार इन शिक्षाप्रद कहानियों से मेरे जीवन पर बचपन में ही अच्छे संस्कार पड़ गये थे।

वस्तुतः मेरे आदरणीय पिताजी मुझे पढ़ाना नहीं चाहते थे, क्योंकि मेरे बड़े भाई साहिब श्री ओम् प्रकार कपूर पहले ही सनातन धर्म हाई स्कूल में पढ़ते थे और उनके पास इतने साधन नहीं थे कि वे मुझे भी पढ़ा सकें। क्योंकि चौक आर्यसमाज पटियाला में उनकी पान सिग्रेट की एक छोटी सी दुकान थी। गर्मियों में तो अच्छी आय हो जाती थी परन्तु सर्दियों में आय कम हो जाती थी। उनकी कोई स्थाई आय नहीं थी। मुझे याद है कि वे कहा करते थे–

मैं रोज कुँआ खोदता हूँ और पानी पी लेता हूँ। मैं अपने बच्चों को कैसे तालीम दे सकता हूँ।

परन्तु मेरी आदरणीय माता जी मुझे पढ़ाना चाहती थी। संयोगवश 1942 ई० में जब मेरी आयु 6 वर्ष की थी। तब श्री सनातन धर्म हाई स्कूल

के अध्यापक पान खाने के लिए मेरे पिताजी की दुकान पर आया करते थे और मेरे पिता जी को कहा करते थे कि मुझे स्कूल में पढ़ाई करने के लिए भेजे। उन अध्यापकों में से एक दिन मास्टर बलबीरचंद जी ने मेरे पिताजी से कहा कि मैं इस बच्चे को स्कूल में ले जाकर एक सप्ताह बाद इसका टैस्ट लेकर दाखिल करूँगा, यदि यह पढ़ाई में ठीक रहा तो आपका कोई भी पैसा खर्च नहीं होगा। अगले दिन मास्टर बलबीर चंद जी मुझे स्कूल ले गये और उन्होंने मुझे उर्दू का कायदा, तख्ती आदि दिये जोकि उनके पास सैम्पल के रूप में आये थे। एक सप्ताह पश्चात् मैंने अच्छी उर्दू वर्णमाला लिखकर दिखाई। मास्टर बलबीर चंद बड़े प्रसन्न हुये। वे लिखी हुई तख्ती मेरे दादा व पिता जी के पास लेकर आये और उनको यह दिखाई। मास्टर बलबीर चंद जी ने कहा—

आप का यह बच्चा पढ़ाई में ठीक ठाक है और बड़ी लगन से पढ़ता है। मुझे आशा है कि यह अवश्य पढ़ जायेगा।

इसके पश्चात् उन्होंने उर्दू में लिखी हुई फीस माफी की अर्ज़ी पर मेरे पिता जी के हस्ताक्षर करवा लिये और हैडमास्टर जी से मेरी फीस माफ करवा दी। इस प्रकार बड़ी कठिन परिस्थितियों में मेरी पढ़ाई आरम्भ हुई। परन्तु मेरे छोटे भाई श्री सत्य प्रकाश कपूर को दुकान पर काम करने के लिए मेरे माता पिता ने स्कूल से उठा लिया क्योंकि उनका बचपन से पढ़ाई में मन कम लगता था और वह स्कूल से भाग कर बाग़ में खेलने के लिए चला जाता था। इसके पश्चात् मैं अपने दादा जी के साथ 1945 ई० में हरिद्वार भी गया। परन्तु मेरे छोटे भाई सत्य प्रकाश कपूर भी मेरे दादा जी के साथ जाना चाहते थे। इसलिये मुझे याद है कि वे बहुत रोये। परन्तु माता जी ने उन्हें कुछ खिलौने और पैसे देकर चुप करवा दिया। हरिद्वार जाकर मैंने अपने दादा जी के साथ अनेक मंदिरों के दर्शन किये। मेरे दादा जी हनुमानजी के अनन्य भक्त थे। जब वे हनुमानजी के मंदिर में मुझे साथ ले कर गये तो पुजारी कहने लगा अभी आप हनुमानजी के दर्शन नहीं कर सकते क्योंकि वे आराम कर रहे हैं। फिर हम दोनों श्रीकृष्ण के मंदिर में गये वहाँ का पुजारी भी कहने लगा कि

अभी आप श्रीकृष्ण के दर्शन नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें स्नान कराया जा रहा है।

मैंने अपने दादा जी से कहा—आप कैसे परमात्मा में विश्वास करते हो जिसके हम दर्शन नहीं कर सकते। मैंने अपने दादा जी को पुनः कहा कि मैं ऐसे परमात्मा पर विश्वास नहीं करता जोकि मंदिरों, मस्जिदों, गिरिजाघरों और गुरुद्वारों के तालों में बंद कर रखा जाता है। बल्कि मैं उस परमात्मा में विश्वास करता हूँ जोकि सृष्टि के कण-कण में व्यापक है। मेरा उत्तर सुनकर मेरे दादा जी आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया—

तू एक दिन बहुत बड़ा इन्सान बन जायेगा क्योंकि अभी से तेरी बुद्धि बहुत कुशाग्र एवं तार्किक है।

3. शिक्षा

मैंने बड़ी ग़रीबी और मुश्किल से अपनी शिक्षा आरम्भ की थी इस प्रकार सतत् संघर्ष करने के पश्चात् मैंने श्री सनातन धर्म हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की। तब मैंने महेन्द्रा कॉलेज पटियाला में प्रथम वर्ष में दाखिला ले लिया। मेरे नानाजी के छोटे भाई श्री जमनादास बहल जी ने दाख़िले में मुझे आर्थिक सहायता दी थी। अतः मैं अब भी उन्हीं का बहुत कृतज्ञ हूँ। कॉलेज में पढ़ता भी था और साथ-साथ होम ट्यूशन भी करता था। मैंने आठवीं और दसवीं तथा +2 के विद्यार्थियों को पढ़ाया। मैं अपनी पढ़ाई की ओर विशेष ध्यान नहीं दे सका। इसके अतिरिक्त मुझे कॉलेज जाकर भी अपनी रुचि का नहीं पता चला। क्योंकि मेरे माता पिता अशिक्षित थे और किसी भी व्यक्ति ने मुझे गाइड नहीं किया। इस प्रकार अनेक असफलताओं के उपरांत मैंने बी.ए. की परीक्षा पास की।

4. वंशपरिचय

(1) श्रीराम गुलाम कपूर (1883 ई०-1973 ई०)— मेरे दादा जी का नाम श्रीराम गुलाम कपूर था। मेरे जन्म से पूर्व वे पटियाला नगर में पकोड़े, दही

भल्ला आदि की दुकान करते थे। फिर वे मेरे पिता जी के साथ पान, सोडा और बर्फ का काम करने लगे थे। वे हनुमानजी के मंदिर में प्रतिदिन जाया करते थे और वहाँ पर बैठकर ध्यान भी लगाते थे। मैंने कई बार वहाँ पर उन्हें ध्यान लगाते हुए देखा था। लगभग 30 वर्ष की अल्पायु में ही उनकी धर्मपत्नी माया देवी जी का निधन हो गया था। कहते हैं कि पहले माया देवी जी ने एक कन्या को जन्म दिया और कुछ समय के बाद पहले माता का फिर पुत्री का निधन हो गया था। वे अपने पास चलने के लिए लाठी रखते थे। जब वे प्रातः बिस्तर से सोकर उठते थे तो अपने पलंग के नीचे कई बार लाठी फेरते थे। पहले तो मुझे समझ में नहीं आया कि वे ऐसा क्यों करते हैं। जब मैंने एक दिन उन्हें पूछा कि आप ऐसा क्यों करते हो तो उन्होंने मुझे उत्तर दिया–

बेटा! मैं ऐसा इसलिए करता हूँ ताकि मेरे दोष दूर हो जाएँ। दरअसल हम को दूसरे लोग इसलिए बुरे लगते हैं क्योंकि हम अपने दोष नहीं देखते।

इसके अतिरिक्त मेरे दादा जी के मुहम्मद खां नामक मुसलमान एक दोस्त थे। वे कई बार हज़ कर चुके थे फिर भी उन्होंने जीवन में कोई सुधार नहीं आया था। अतः मेरे दादा जी उन्हें कहा करते थे–

मक्का गये मदीना गये बन गये हाजी।

आदत गई न इल्लत (बुरी आदत) गई रहे पाजी (दुष्ट) के पाजी।।

इस प्रकार मेरे दादा जी मुझे बहुत प्यार करते थे। क्योंकि मैं उनकी आर्थिक सहायता भी करता था। इस प्रकार 25.11.1973 को 91 वर्ष की लम्बी आयु भोगने के बाद उनका निधन हो गया। मृत्यु तक उनका स्वास्थ्य ठीक चलता रहा।

(2) श्री मदन लाल कपूर (1916 ई० से 1979 ई०) – मेरे आदरणीय पिताजी का नाम श्री मदन लाल कपूर था। उन्हीं के एक बड़े भाई भी थे, जिनका नाम श्री जय गोपाल कपूर था। पहले ये दोनों भाई इकट्ठे रहते थे परन्तु 1954 ई० में अलग-अलग हो गये। मेरे पिता जी अनपढ़ थे और

उनकी पान सोड़ा की चौक आर्य समाज पटियाला में दुकान थी और इसके अतिरिक्त उनका परिवार भी काफी बड़ा था। इसलिये गुजारा बड़ी मुश्किल से होता था और माता जी के साथ उनका झगड़ा भी रहता था। 3.11.1974 को उन्हें लकवा हो गया। मैंने बीमारी में उनकी काफी सेवा की और दो बार चण्डीगढ़ लाकर डॉक्टर को भी दिखाया। परन्तु फिर भी वह सुरापान करते रहते थे। अन्ततः 24-12-1979 को 64 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

(3) श्रीमती बचनी देवी कपूर (1916 ई० -2000 ई०) – मेरी आदरणीय माताजी श्रीमती बचनी देवी कपूर अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी। आपने 9 बच्चों को जन्म दिया था। आप एक अनपढ़ महिला थीं। आप अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप मन्दिरों में सत्संगों में जाया करती थीं और बच्चों को अत्यंत शिक्षाप्रद कहानियाँ भी सुनाया करती थीं। 1962 ई० में एक दिन हरिद्वार से एक कथावाचक श्री सत्यनारायण मंदिर में रामायण की कथा करने के लिये आये। मेरी माताजी ने मुझे कहा कि यह महात्मा बड़ी प्रभावोत्पक रामायण की कथा करते हैं और भी मेरे साथ जाकर सुनिए। मैं अपनी माता जी के साथ सत्यनारायण मन्दिर में कथा सुनने के लिये चला गया। वस्तुतः पंडित जी ने गाकर बहुत ही अच्छी रामायण की कथा की और मैं उनसे अत्यधिक प्रभावित भी हुआ। अगले दिन भोजन के लिए पंडित जी को माता जी ने घर पर बुला लिया और उन्होंने साबत मूंग और दही के साथ भोजन किया और वे अत्यधिक प्रसन्न हुये। उस समय मेरे दादा जी घर पर ही बैठे थे। पंडित जी ने 'रामचरितमानस' से कथा के मध्य निम्नलिखित पंक्तियाँ बोली थीं–

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाहुँ पर बचनु न जाई।।

–अयोध्याकाण्ड 27.2

सूर नर मुनि सब कै यह रीति। स्वारथ काज करहिं सब प्रीती

–किष्किन्धकाण्ड 11.1

जब पंडित जी भोजन कर चुके थे तो मैंने अपने दादाजी एवं माता जी

के सामने पंडित से निवेदन किया कि राम कथा में आपने जो ऊपरलिखित पंक्तियाँ बोली थी वे ठीक नहीं हैं । उन्होंने उत्तर दिया कि मैं विगत 35 वर्षों से रामकथा कर रहा हूँ आज तक किसी भी श्रोता ने मुझे ऐसी बात नहीं कही है । उन्होंने मुझसे कहा कृपया आप ठीक पंक्तियाँ बोलकर दिखाइए—मैंने गाकर ये पंक्तियाँ इस प्रकार सुनाई—

रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई ।

सुर नर मुनि सब कै यह रीति । स्वारथ लागि करहिं सब प्रीति । ।

परन्तु पंडितजी फिर भी नहीं माने । परन्तु मुझे पूर्ण आत्मविश्वास था कि मैं ठीक बोल रहा हूँ । इसके पश्चात् मैं 'रामचरितमानस' लाया और पंडित जी को दिखाया फिर उन्होंने अपनी गलती स्वीकार की । इसके पश्चात् मैंने पंडित जी से रामायण के विषय में अधोलिखित 5 प्रश्न पूछे ।

(1) 'रामचरितमानस' कितने समय में लिखा गया ?

(2) 'रामचरितमानस' का कौन सा काण्ड सर्वश्रेष्ठ है ?

(3) श्रीराम के बहनोई और बड़ी बहन का क्या नाम था ?

(4) रावण के पिता का क्या नाम था ?

(5) राम रावण युद्ध कितने दिन चला था ?

परन्तु दुर्भाग्यवश पंडित जी ऊपरलिखित प्रश्नों में से एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके । उन्होंने मुझसे कहा कि बेटा आपने बड़े महत्त्वपूर्ण प्रश्न किये हैं । कृपया इनके उत्तर बताइये और मुझे लिखकर भी दें ताकि भविष्य में मैं अपने श्रोताओं को रामकथा कहते समय बता सकूँ । मैंने इन प्रश्नों का उत्तर पंडित जी को लिखकर दे दिये जो इस प्रकार से हैं—

(1) तुलसीदास जी ने ''रामचरितमानस'' की रचना 2 वर्ष, 7 मास और 26 दिनों में की थी ।

(2) ''अरण्यकाण्ड'' रामचरितमानस का सर्वश्रेष्ठ काण्ड है ।

(3) श्रीराम के बहनोई और बड़ी बहन का नाम शृंगीऋषि और शांता था ।

(4) रावण के पिता का नाम विश्रवा ऋषि था ।

(5) राम रावण युद्ध 18 दिन तक चला ।

पंडित जी मेरे उत्तर सुनकर आश्चर्यचकित रह गये । उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया था कि एक दिन आप प्रकाण्डपंडित बन जाओगे ।

इस प्रकार आदरणीया माता जी के संस्कारों का मेरे जीवन पर काफ़ी प्रभाव पड़ा । वह ऐसी कहानियाँ सुनाती थी कि मैं अब भी नहीं सुना सकता हूँ । यह उनकी प्रभुप्रदत्त प्रतिभा थी । वह अपने सभी बच्चों और गली के बच्चों को भी शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाया करती थीं । वह पंचकूला में भी मुझे और मेरे मित्रों सर्वश्री चन्द्र मोहन डींगरा और आर.सी. गोयल को कहानियाँ सुनाकर मंत्रमुग्ध कर देती थीं । मैंने भी उनको अनेक धार्मिक ग्रंथ सुनाये और वे बड़े ध्यान से सुना करती थीं । उनकी बुद्धि अत्यंत कुशाग्र थी । वह मेरे पास पटियाला से 1986 में आकर रहने लगी और फिर पंचकूला भी रही । यहाँ उनका जीवन सुखमय, शांतमय और आनन्दमय व्यतीत हुआ । अंत में 25.2.2000 को 84 वर्ष की आयु में पंचकूला में ही उनका निधन हो गया ।

(4) श्री ओम् प्रकाश कपूर, कोठी नं. 1171, एस.एस.टी. नगर पटियाला,फोन-01755060773, मोबाइल 9988045780 – श्री ओम् प्रकाश कपूर मेरे बड़े भाई साहिब हैं जो कि पंजाब सरकार से बी.ई.ओ. (B.E.O.) के पद से सेवानिवृत्त हैं । आप बड़े परिश्रमी व्यक्ति हैं आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कमला रानी कपूर था जिसका 3.5.2003 को दुर्घटना में निधन हो गया जोकि एक समझदार महिला थी । ओम् प्रकाश कपूर जी के चार बच्चे हैं–श्रीमती सरोज रोड़ा, सर्वश्री राजकुमार कपूर, शम्मी कपूर और राकेश कपूर । श्री ओम् प्रकाश कपूर भौतिकवादी व्यक्ति और उनकी आध्यात्मिक विषयों में कोई रुचि नहीं है । परन्तु आप भाग्यशाली हैं और आप अक्सर कहा करते हैं–

इन्सान को वक़्त से पहले और तक़दीर से ज़्यादा कुछ भी नहीं मिलता है ।

(5) श्री सत्य प्रकाश कपूर (1938 ई०-1988 ई०) – मेरे छोटे भाई का नाम श्री सत्यप्रकाश कपूर था । वह बिल्कुल अनपढ़ थे । परन्तु समझदार बड़े

थे । वह शराब भी बहुत पीते थे और सुबह बड़ी मुश्किल से उठते थे । उनका विवाह 1970 ई० में श्रीमती स्वर्णा रानी के साथ हो गया जो कि सीधी सादी महिला थी । उसके घर एक रेखा नाम की पुत्री पैदा हुई और सत्यप्रकाश कपूर का 3.12.1988 ई० को निधन हो गया ।

(6) श्री सुरेन्द्र कुमार कपूर, मकान नं. 859, गली नं. 9, गुरुबक्स कॉलोनी पटियाला, मोबाइल 9653384686, 9417470301 – आप मेरे छोटे भाई हैं जो कि फेरी पर सामान बेचकर अपनी रोज़ी-रोटी कमाते थे। आप भौतिकवादी हैं । मैं इनकी 2000/- रुपये प्रतिमास सहायता करता हूँ । इसके अतिरिक्त संकटकाल में अधिक भी सहायता कर देता हूँ । इनकी धर्मपत्नी का नाम ऊषा रानी कपूर है और आपके 5 बच्चे हैं – संजीव कुमार कपूर, मनोज कपूर, राजीव कपूर तथा बेटी आरती और पूजा सरबाल ।

(7) प्रो. राजिन्द्र कुमार कपूर कोठी नं. 3/बी ग्राम बरारी पोस्ट ऑफिस जवाहर मार्किट, नंगल (जिला रोपड़) मोबाइल 9356328038, 9501280382– आप मेरे छोटे भाई हैं । आप बटोली कॉलिज नंगल में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर आसीन थे । आप बड़े बुद्धिमान योग्य, कर्मठ व्यक्ति हैं । मुख्यतः आप भौतिकवादी हैं फिर भी अध्यात्म की कुछ झलक आपके व्यक्तित्व में दिखाई देती है । आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती आशा रानी कपूर है जोकि पंजाब राज्य बिजली बोर्ड में अपर सचिव (Under Secretary) के पद से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं । आप अत्यंत परिश्रमी महिला हैं । आप कभी-कभी मेरे घर आकर भी घर का सारा काम करती हैं । अतः मैं आपका अति कृतज्ञ हूँ ।

(8) श्री जयप्रकाश कपूर मुहल्ला बिट्ठड़ा मकान नं. 1705 समीप चौक आर्यसमाज, पटियाला 147001, मोबाइल 9780358134, 8360610482– आप मेरे सबसे छोटे भाई हैं । आप अनपढ़ आदमी हैं और पटियाला में मनियारी की दुकान करते थे । परन्तु आपकी आय बहुत ही कम है । इसलिये मैं इनको भी प्रतिमाह 2000/- रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान करता हूँ । इसके अतिरिक्त संकट काल में और भी सहायता कर देता हूँ । आपकी

धर्मपत्नी का नाम श्रीमती गीता रानी कपूर है। वह कई वर्षों तक बीमारी व कमजोरी के कारण बिस्तर पर ही पड़ी हुई है फिर भी घर का सारा कार्य करती है। आपके पति भी आपकी बहुत सेवा करते हैं। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएँ। वह बहुत ही साहसी एवं संतोषी महिला हैं। आपके दो बच्चे—नंद किशोर कपूर बेटा तथा किरण सबरवाल बेटी हैं।

(9) श्रीमती दयारानी मल्होत्रा (1940 ई०-1997 ई०) – मेरी छोटी बहन का नाम श्रीमती दया रानी मल्होत्रा था। आप अत्यंत सुशील और भोली महिला थीं। आपका विवाह 18.6.1959 ई० को श्रीराम गोपाल मल्होत्रा जी के साथ हो गया जोकि हीरों का व्यापार करते थे। अतः 21.4.1984 ई० को 56 वर्ष की आयु में श्री राम गोपाल मल्होत्रा जी का निधन हो गया। इस कारण दया बहन पर परिवार बोझ आ पड़ा। परन्तु उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने बच्चों का पालन पोषण किया। आपके इस समय पाँच बच्चे हैं—राकेश मल्होत्रा, सुभाष मल्होत्रा, रेणु मल्होत्रा, रीटा कपूर तथा सुनीता रानी। इस प्रकार दया बहन ने अपने सारे बच्चों का विवाह कर दिया था फिर 23.9. 1997 को 57 वर्ष की आयु में उनका अचानक निधन हो गया।

5. नौकरी

आरम्भ में नौकरी करने में मेरी कोई विशेष रुचि नहीं थी। इसलिये कई वर्ष तक मैं आठवीं, दसवीं तथा +2 के विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ा कर ही अपना गुजारा करता था। मुझे अनेक सरकारी नौकरियाँ मिली परन्तु मैंने उन्हें स्वीकार नहीं किया। क्योंकि एक तो मैं अपनी शैक्षणिक योग्यता बढ़ाना चाहता था और प्राईवेट ट्यूशन में मुझे नौकरी से अधिक आय हो जाती थी। सबसे पहले मुझे पैप्सू राज्य में पी.डब्ल्यू.डी. इलैक्ट्रीसिटी ब्रांच (Electricity Branch) में दिनांक 6.6.1956 ई० को पटियाला में जूनियर क्लर्क

(Junior Clerk) की नौकरी मिली थी। उस समय में महिन्द्रा कॉलेज पटियाला में पढ़ता था। मुझे केवल नौकरी में 75/- रुपये मासिक मिलने थे। परन्तु प्राइवेट ट्यूशन से मैं 200/- रुपये से भी अधिक प्रतिमास कमा लेता था। इसलिये मैंने यह नौकरी नहीं की। इसके अतिरिक्त मैंने कई सरकारी नौकरियों को भी ठुकरा दिया। इसके पश्चात् मेरी आयु भी बढ़ने लगी। मैंने विचार किया कि कहीं अधिक आयु हो जाने के कारण मैं सरकारी नौकरी से वंचित न हो जाऊँ। अतः मैंने इस ओर विशेष ध्यान देना शुरू कर दिया।

तब मैंने सबसे पहले सैंट्रल पब्लिक लाईब्रेरी पटियाला में जूनियर लाईब्रेरियन (Junior Librarian) की कच्ची नौकरी की। इसमें मुझे केवल 80/- रुपये मासिक मिलते थे। यह नौकरी मैंने दिनांक 6.1.1963 ई० से 17.4.1963 तक की। इसके पश्चात् मेरी नियुक्ति मलेरिया विभाग पटियाला में सर्विलेंस इंस्पैक्टर (Surveillance Inspector) के रूप में हुई जिस पर 5.10.1963 ई० से 15.12.1963 ई० तक रहा। डकाला मेरा मुख्य कार्यालय था तथा मुझे चार अन्य कर्मचारी मिले हुए थे। यहाँ पर मुझे 157 रुपये 50 पैसे प्रतिमास वेतन मिलने लगा था। उस समय मुझे पटियाला से 20 मील दूर तक टूर पर जाना पड़ता था। मैं रात को ईमानदारी से नौकरी करके घर आता था। परन्तु माता जी को यह नौकरी बिल्कुल पसंद नहीं थी। इसके बाद मुझे पंजाब बिजली बोर्ड पटियाला से एल.डी.सी. (L.D.C.) के पद का नियुक्ति पत्र मिला। मैंने यह पत्र अपने प्रिय मित्र स्वर्गीय श्री रमेश कुमार मारिया को दिखाया। उन्होंने मुझे कहा कि यह आपकी पक्की नौकरी है और आप शीघ्र ही स्वीकार कर लो। इसके अतिरिक्त माता जी भी यही चाहती थीं। अतः मैंने 16.12.1963 ई० को पंजाब बिजली बोर्ड पटियाला में एल.डी.सी. (L.D.C.) की नौकरी स्वीकार कर ली।

इसके बाद दिनांक 21.12.1963 ई० को मलेरिया विभाग की अस्थाई नौकरी भी स्थाई हो गई। वहाँ पर वेतन अधिक था तथा उन्नति के अवसर भी अधिक थे। परन्तु स्व० रमेश कुमार मारिया तथा माता जी के

आदेश से मैंने इस नौकरी को स्वीकार नहीं किया। फिर दिनांक 26.12. 1963 ई० मुझे पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से प्रूफ रीडर (Proof Reader) का नियुक्ति पत्र आया परन्तु मैंने उसे अस्वीकार कर दिया क्योंकि वहाँ पैंशन नहीं थी। इसी प्रकार 31-12-1963 ई. को मुझे एल.आई.सी. (L.I.C.) से सहायक पद के लिये नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। उस पद पर 175/- रुपये मासिक मिलने थे परन्तु उसे भी मैंने स्वीकार नहीं किया क्योंकि वहाँ भी पैंशन नहीं थी।

6. नौकरी में तरक्की

दिनांक 2.5.1967 ई० को हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड बन गया और मुझे स्टोर परचेज सैक्शन (Store Purchase Section) से सेल्ज़ सैक्शन (Sales Section) में लगा दिया गया। वहाँ पर ओवर टाईम (overtime) लगता था और अच्छे पैसे बन जाते थे। परन्तु एक दिन मुझे स्व० जमना दास तनेजा सुपरिन्टैंडैंट (अस्टेब्लिसमैंट शाखा) (Estt. Section) हमारी दुकान के पास मिल गये। उन्होंने मुझे कहा कि मैं आपको सी.ई. (अस्टेब्लिसमैंट शाखा) में लेना चाहता हूँ। परन्तु मैंने उन्हें निवेदन किया कि वे ऐसा न करें क्योंकि ऐसा करने से मेरा ओवर टाईम (Overtime) बंद हो जाता। परन्तु वे नहीं माने और मेरी बदली सी.ई. ऑप्रेशन अस्टाब्लिसमैंट शाखा (C.E. (Op.) Estt. Section) में कर दी।

कुछ समय पहले हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड में सी.आर.ए.-I (C.R.A-I) के अन्तर्गत यू.डी.सी. (U.D.C.) की नौकरियां निकली थीं और मैंने उसके लिए आवेदन पत्र दे रखा था। जब मैंने जमना दास तनेजा जी से इसके विषय में पूछा तो उन्होंने कहा कि आपकी अर्ज़ी मेरे पास नहीं आई। इसके पश्चात् उन्होंने के.के. अग्रवाल जी से पूछा जो उस समय वहाँ पर रिकॉर्ड कीपर थे। तो पता चला कि मेरी अर्ज़ी उन्होंने आगे भेजी ही नहीं थी।

मैंने के.के. अग्रवाल जी को अर्ज़ी लिखवाई और दिनांक 2.8.1967 ई० में मेरा साक्षातकार (Interview) यू.डी.सी. (U.D.C.) के पद के लिए धूलकोट हुआ। मेरी इंटरव्यू बहुत अच्छी हुई जितने भी मेरे से प्रश्न पूछे गये मैंने सबका ठीक ठीक उत्तर दे दिया। मैं और श्री के.के. अग्रवाल जी दोनों ही 10.10.1967 ई० को यू.डी.सी. (U.D.C.) के पद पर हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड चण्डीगढ़ में नियुक्त हो गये।

परन्तु उस समय कैडर का फैसला नहीं हुआ था। जब मुझे हैड ऑफिस कैडर मिला इसके पश्चात् मैंने 2.8.1968 ई० को सी.ई. (ऑप्रेशन) अस्टाब्लिसमैंट सैक्शन (C.E. (Op.) Estt. Section) में यू.डी.सी. (U.D.C.) के पद को स्वीकार किया। वस्तुतः मैं चाहता था कि मेरी चाहे पदोन्नति हो या न हो परन्तु मैं मुख्यालय में ही कार्य करना चाहता था। मेरी डिपार्टमैंटल अकाउंट्स एग्जामिनेशन (Departmental Accounts Examination) में कोई रुचि नहीं थी। अपितु मेरी रुचि तो सत्संग व स्वाध्याय में थी। अतः मैंने बड़े बड़े धार्मिक ग्रंथों जैसे वेद, उपनिषद्, रामायण, गीता आदि का अध्ययन एवं अनुशीलन किया। यहाँ तक कि विभाग ने मेरी इन्क्रीमैंटस (Increments) भी रोक दी थी।

एक दिन जब मैं सामान्य अनुभाग (General Section) में यू.डी.सी. (U.D.C.) था मेरे अधीक्षक ने मुझे तनख़्वाह लाने के लिए कहा। जब मैंने अनुभाग में आकर तनख्वाह गिनी तो 10000/- (दस हज़ार रुपये) फालतू थे। तब कैशियर को यह राशि लौटाने के लिए गया तो पता चला कि एक कर्मचारी के वेतन में 10000/- कम थे। कैशियर के दोबारा गिनने से उन्हें 10000/- रुपये वापिस दे दिये गये जिस पर उन्होंने मेरा धन्यवाद किया और कहा कि आप बहुत नेक और ईमानदार इन्सान हैं।

इन्क्रीमैंट बंद होने के कारण मैंने 1972 में डी.ए.ई. (D.A.E.) की परीक्षा पास करने का संकल्प लिया और मेरे मित्र जे.के. जैन दोनों ने खूब

पढ़ाई की। मैंने 7.11.1973 ई० को डी.ए.ई. (D.A.E.) की परीक्षा पास कर ली। मैं इस सहयोग और सहयाता के लिए अपने मित्र जे.के. जैन जी का अत्यंत आभारी हूँ।

परीक्षा पास होने के बाद मेरी पदोन्नति दिनांक 21.1.1974 ई० को सहायक (मुख्यालय) के रूप में हो गई। मैं लगभग 23 वर्षों तक सहायक (मुख्यालय) के रूप में बोर्ड की विभिन्न अनुभागों पर बड़ी ईमानदारी, सच्ची लगन एवं पूर्ण निष्ठा से कार्य करता रहा। लगभग पाँच वर्ष तक मैंने सी.ए. ओ. सी.पी.सी. शाखा (CAO CPC Section) में कार्य किया जहाँ पर लाखों रुपये का प्रतिदिन भुगतान होता था। मैंने इस पद पर पूर्ण ईमानदारी से कार्य किया और एक पैसे की भी रिश्वत नहीं ली। क्योंकि जो व्यक्ति पूर्ण ईमानदारी और निष्ठा से कार्य करता है वही सच्चा राष्ट्र भक्त होता है। रिश्वत लेना तो अमानत में ख़्यानत है।

इसी प्रकार जब स्टोर में से 7,00,000/- रुपये का ग़बन हो गया तो अधीक्षक के कहने पर मुझे ईमानदार और नेक इन्सान समझ कर मेरी डयूटी स्टोर में लगवा दी गई। उस करोड़ों के स्टोर में पूर्ण ईमानदारी और निष्ठा के साथ कार्य किया और कभी भी एक पैसा भी रिश्वत नहीं ली। परन्तु मैं स्टोर में रहना नहीं चाहता था क्योंकि उस समय मैं एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। फिर भी दिनांक 1.8.1983 को सी.ए. ऑफिस से मेरी बदली स्टोर में कर दी गई। मुझे मजबूरन वहाँ जाना पड़ा। मैंने लगभग 12 वर्षों तक स्टोर में बड़ी ईमानदारी एवं निष्ठा से कार्य किया। इस काल में 3 सहायक 2 अधीक्षक सस्पैंड हुये।

इस पर भी मेरे अधिकारी मुझसे बड़े प्रसन्न थे। स्टोर पर कई अधिकारियों, विजीलैंस, सैक्रेटरी, एक्सियन, एस.ई. तथा सी.ई. ने छापे मारे परन्तु किसी भी आईटम में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं पाया गया।

क्योंकि मैं स्वयं प्रति मास स्टोर की चैकिंग किया करता था। एक बार सी.ई. तथा एस.ई. स्टोर में आये तो उन्होंने स्टोर को बंद पाया। इस पर जब अधीक्षक से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि धर्मपाल कपूर (सहायक मुख्यालय) रेलवे स्टेशन पर सामान छुड़ाने गये हुये हैं। यदि समय पर यह सामान न लिया जाए तो जुर्माना देना पड़ता है। इस पर एस.ई. ने कहा कि धर्मपाल कपूर इतना सारा कार्य अकेले कैसे कर लेते हैं। पहले सामान लाना और फिर रिकॉर्ड में चढ़ाना तथा सारे बोर्ड को बाँटना। तब उन्होंने यह स्वीकार किया कि यहाँ दो कर्मचारियों की आवश्यकता है। अतः उन्हें एक और सहायक दिया जाए जिससे स्टोर का काम सुचारू रूप से चल सके। उन्होंने एक सहायक को स्टोर में लगा तो दिया परन्तु वह उनके पास ही काम करता रहा। तब मैंने उनके पास जाकर निवेदन किया कि मुझे एक सहायक दे दो। इस पर उन्होंने मुझे उत्तर दिया—

आप बड़े बहादुर और ईमानदार कर्मचारी हो। आप दो कर्मचारियों की तो बात ही क्या कई कर्मचारियों का काम अकेले ही कर सकते हो। अतः आपको किसी अन्य कर्मचारी की आवश्यकता नहीं है।

7. गृहस्थी बनने के असफल प्रयास

वस्तुतः गृहस्थाश्रम सब आश्रमों में श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि ब्रह्मचर्य आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम सब इसी पर आधारित हैं और सृष्टिसृजन भी इसी से होता है। आरम्भ से ही विवाह में मेरी कोई रुचि नहीं थी। क्योंकि मैं यह समझता जब व्यक्ति अकेला होता है तो उसकी दो टांगें होती हैं और विवाह के उपरांत एक पत्नी मिल जाती है और फिर चार टांगें हो जाती हैं। चार टांगें जानवर की होती हैं। फिर एक बच्चा हो जाता है और फिर व्यक्ति की छः टांगें हो जाती हैं। छः टांगें मक्खी की होती हैं। इसी प्रकार एक बच्चा और हो जाने से व्यक्ति की आठ टांगें हो जाती है। आठ टांगें

मकड़ी की होती हैं । इस प्रकार व्यक्ति मकड़जाल में फंस जाता है और मैं इस मकड़जाल में फंसना नहीं चाहता था ।

परन्तु जब मैं सहायक (मुख्यालय) बना तो मैंने प्राइवेट रूप से और समाचर पत्रों द्वारा विवाह के लिये उपयुक्त कन्या को ढूंढने का प्रयास किया । मेरे पास अनेक लड़कियों के माता-पिता के पत्र आये और मैंने भी उनके साथ पत्र व्यवहार किया । परन्तु कहीं भी कोई बात नहीं बनी और परिणामतः मैंने विवाह करने का विचार सदा के लिये त्याग दिया । मैं समझने लगा था कि आबादी न बढ़ाना ही राष्ट्रहित है और दूसरे मैंने विचार किया कि विवाह मेरी अध्यात्म प्रगति में बाधा है । इसलिये मैं कभी न पति बना न उपपति बना अपितु इन्द्रियों पर यती (रोक) लगा कर यति बन गया । वस्तुतः जो व्यक्ति युद्ध में विजयी होता है वह वीर होता है और जो इन्द्रियों को विजय कर लेता है वह महावीर होता है । ऐसा तभी होगा यदि व्यक्ति पवित्र एवं पावन जीवन व्यतीत करे और सारी नारी जाति में मातृत्व की भावना देखे ।

8. शैक्षणिक योग्यता में बढ़ोतरी

सन् 1980 ई० की बात है कि एक दिन मेरे प्रिय मित्र स्व० श्री सत्यपाल मोदी जी मेरे 3255/23 डी, चण्डीगढ़ में मेरे घर आये । उस समय वे एम०ए० (हिन्दी) कर चुके थे । मैंने उन्हें हिन्दी भाषा के पाँच शब्द बोले तथा हिन्दी साहित्य के विषय में पाँच प्रश्न पूछे । वे दुर्भाग्यवश न तो पाँचों शब्द ठीक से लिख पाये और न ही उनके उत्तर दे सके । पाँच शब्द निम्नलिखित थे– **उज्ज्वल, साहित्यिक, कवयित्री, स्वाध्याय और सेवा-श्रुषा ।**

हिन्दी साहित्य के पाँच प्रश्न निम्नलिखित थे–

(1) **हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि कौन थे ? (तुलसीदास)**

(2) **हिन्दी साहित्य के नाटक सम्राट् कौन थे ? (जयशंकर प्रसाद)**

(3) **हिन्दी साहित्य के कहानी एवं उपन्यास सम्राट कौन थे ?**

(मुंशी प्रेमचन्द)

(4) हिन्दी साहित्य के निबंधकार एवं आलोचना सम्राट कौन थे?

(आचार्य रामचन्द्र शुकल)

(5) हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कौन सा है?

(रामचरितमानस)

मेरे हृदय को बहुत चोट पहुँची कि मेरे प्रिय मित्र सत्यपाल मोदी जी एम०ए० (हिन्दी) कर चुके हैं परन्तु उन्हें हिन्दी का ज्ञान बहुत कम है। अतः मैंने भी अपनी शैक्षणिक योग्यता बढ़ाने का प्रयास किया। मेरे मित्र श्री ओम् प्रकाश सैनी जी दिनांक 21.6.1981 ई० को मुझे न्यू इंडिया कॉलेज एस.सी. एफ. 32, सैक्टर 23 डी में प्रोफैसर भूप सिंह मेहता जोकि गुरुजी के नाम से प्रसिद्ध थे, के पास ले गये और मैंने प्रभाकर की कक्षा में दाखिला ले लिया। मैंने प्रभाकर की परीक्षा में कड़ी मेहनत की और सच्ची लगन से तैयारी की और सन् 1982 ई० में प्रभाकर परीक्षा 650 में से 362 अंक लेकर द्वितीय श्रेणी में पास हो गया।

इसके बाद इसी कॉलेज से 1986 ई० में एम.ए. की परीक्षा पास कर ली। इस परीक्षा में 800 में से 421 अंक प्रात किये। इसके लिए मुझे बड़ा परिश्रम करना पड़ा क्योंकि उस समय मेरी डयूटी स्टोर में थी और मेरे अवकाश मांगने पर भी मुझे अवकाश नहीं मिला। मेरे स्थान पर एक अन्य कर्मचारी रतन लाल को लगाया परन्तु वह भी नहीं आया। मुझे केवल परीक्षा के दिन ही अवकाश मिलता था। किसी-किसी दिन तो मैं पेपर देने के बाद 12.00 बजे दोपहर को फिर ड्यूटी पर आ जाया करता था क्योंकि हरियाणा के विभिन्न स्थानों से कर्मचारी समान लेने स्टोर में आ जाया करते थे। यदि मैं ड्यूटी पर न पहुँचता तो उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ता था। इससे राष्ट्र की भी हानि होती। इस प्रकार मैंने अपने कार्य को पूर्ण ईमानदारी से करते हुए पढ़ाई जारी रखी। इसके पश्चात् 1987 ई० में हरियाणा बिजली बोर्ड के सारे कार्यालय चण्डीगढ़ से पंचकूला सैक्टर 6 में आ गये। मैं भी अपने सारे स्टोर के सामान को बड़ी सावधानी और जिम्मेवारी से सिक्योरिटी स्टाफ (Security Staff) के साथ चण्डीगढ़ से पंचकूला में ले आया। इसमें न तो मेरी कोई वस्तु टूटी और न ही गुम हुई। इस प्रकार मैं चण्डीगढ़ से पंचकूला बस में आने जाने लगा।

9. ड्रॉ में प्लाट निकलना

1981 ई० में पंचकूला के सैक्टर 11 और 12ए में 10 मरले के प्लॉट निकले थे। परन्तु मुझे इसका कोई भी ज्ञान नहीं था क्योंकि आरम्भ से ही मेरी न तो चण्डीगढ़ और न ही पंचकूला में मकान बनाने में रुचि थी। परन्तु एक दिन मेरे प्रिय मित्र सत्यपाल मोदी जी ने इन प्लॉटों का एक फॉर्म लाकर मुझे दे दिया और उन्होंने मुझे फॉर्म भरने के लिए कहा। एक बार तो मैंने उन्हें फॉर्म भरने से मना कर दिया। परन्तु उनके बार-बार कहने पर मैंने 28.10.1981 को सैक्टर 11 पंचकूला में एक प्लॉट के लिए 1902/- रुपये भर दिये। मेरे साथी कर्मचारियों ने भी कई-कई प्लॉट भर दिये थे। परन्तु 1.5.1983 को सारे बिजली बोर्ड एवं अपर सचिवालय (हरियाणा) में से केवल एक मेरा ही प्लॉट नं. 1135 निकल आया। इसकी मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी और न ही इसमें मेरी रुचि थी। उस समय मैं सी.ए. ऑफिस में सहायक (मुख्यालय) के पद पर कार्यरत था।

सारे बिजली बोर्ड में शोर मच गया और मेरे साथियों ने मुझे बधाई दी। इस पर श्री दयानंद खरवंदा जी को मैंने 50/- भोज के लिए दिये। इसके बाद मैंने प्लॉट का निर्माण कार्य आरम्भ किया। दिनांक 14.4.1989 को नई कोठी में ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी ने यज्ञ किया और इसका उद्घाटन किया। इस कार्य में मेरी आदरणीया माता जी, बहन जी तथा अन्य मित्रों ने भाग लिया। फिर 23.4.1989 को मैं आदरणीया माता जी के साथ चण्डीगढ़ से आकर इसमें रहने लगा। अतः मैं विगत 30 वर्षों से इस कोठी में रह रहा हूँ।

10. मित्र परिचय

(1) श्री बालकृष्ण कालरा (21.12.1935 ई० से 9.11.1986 ई०) से सर्वप्रथम मेरी मुलाक़ात 1954 ई० में हुई। जब मैं श्री सनातन धर्म हाई स्कूल पटियाला में नौवीं कक्षा में पढ़ता था और वे भी आर्य हाई स्कूल की नौंवी कक्षा में पढ़ते थे। आप पढ़ाई में काफी लायक थे और दसवीं में 850 में

से 640 अंक प्राप्त किये थे। फिर आप महिन्द्रा कॉलेज में दाखिल हो गये। वहाँ आपने बी.एससी. की परीक्षा पास करके इसके पश्चात् बी.एड. किया। इसके पश्चात् आप 1961 ई० में एक सरकारी स्कूल में विज्ञान के मास्टर लग गये। फिर आप ने इस पद से त्याग पत्र दे दिया और एम.एस.सी. कैमिस्ट्री करके कन्या महाविद्यालय जालंधर में प्रोफेसर बन गये। 1965 ई० में आप का विवाह देहली की शीला नामक लड़की से हो गया और आपके एक पुत्र और एक पुत्री भी हुई। एक बार मैं उन्हें जालंधर मिलने के लिए भी गया था। आप अत्यंत सज्जन व चरित्रवान् व्यक्ति थे और अपने विद्यार्थियों को बड़ी निष्ठा और लगन से पढ़ाते भी थे। मेरा और उनका बड़ा प्रेम था। परन्तु दुर्भाग्यवश 1986 ई० उनके सिर में रसौली हो गई। दिल्ली में रसौली के आप्रेशन के दौरान ही उनकी दिनांक 9.11.1986 को मृत्यु हो गई। मैं उनका अत्यंत आभारी हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे जीवन में अच्छी प्रकार से गाइड किया था।

(2) श्री रमेश कुमार मडीया कोठी नं. 111/1 गली नं. 9 आनंद नगर बी, पटियाला-147001 मोबाइल 9463909611, 9417709563 (31.10.1939 ई०–29.4.2013 ई०) मेरे सबसे पुराने और प्रिय मित्र थे। मैं इन्हें 1952 ई० से जानता था क्योंकि हम दोनों सनातन धर्म हाई स्कूल पटियाला में एक ही कक्षा में पढ़ते थे। इसके पश्चात् महिन्द्रा कॉलेज पटियाला में आप मेरे साथ बी.ए. तक पढ़ते रहे। तब आप सहायक के पद पर एल.आई.सी. में लग गये। इसके पश्चात् 12.10.1967 ई० को कान्ता नामक लड़की से आपका विवाह हो गया और इनके घर एक बच्चा उत्पन्न हुआ जिसका नाम रजनीश मडीया रखा गया। आप अत्यंत मेहनती और ईमानदारी इन्सान थे। आप कभी मेरे पास चण्डीगढ़ और पंचकूला में आकर ठहरते हैं।

1980 ई० की बात है कि आप एक दिन चण्डीगढ़ मेरे पास आकर ठहरे और हम दोनों स्वामी गीतानंद जी का गीता प्रवचन सुनने के लिये

धूलकोट चले गये। वहाँ पर वीर जी ने गीता प्रवचन किया और हमने ध्यानपूर्वक सुना। इसके पश्चात् वीर जी ने श्रोताओं से कहा कि आप कोई भी प्रश्न पूछिए। मैंने वीर जी से गीता पर निम्नलिखित पांच प्रश्न पूछे–

1. गीता के 700 श्लोकों में से किन-किन पात्रों ने कितने-कितने श्लोक बोले हैं।
2. गीता पर सर्वप्रथम भाष्य किसने लिखा था?
3. गीता में श्रीकृष्ण का मैं, मेरा, मुझे कहने का क्या अभिप्राय था?
4. गीता में ओ३म् एवं योग शब्द कितनी बार प्रयोग हुआ?
5. गीता सार क्या है?

परन्तु वीर जी एक भी प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके। फिर उन्होंने मुझे निवेदन किया कि कृपया आप ही इन प्रश्नों के उत्तर अमुक व्यक्ति को लिख कर दे दें। क्योंकि ये प्रश्न बड़े काम के हैं। इस पर मैंने उन प्रश्नों के उत्तर उस व्यक्ति को लिखवा दिये जिससे वीर जी बहुत प्रसन्न हुए। इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार से हैं–

1. गीता के 700 श्लोकों में से विभिन्न पात्रों के श्लोकों की संख्या इस प्रकार से है–

   धृतराष्ट्र = 1
   संजय = 41.5
   अर्जुन = 83.5
   श्रीकृष्ण = 574

2. आदि शंकराचार्य ने सर्वप्रथम गीता पर भाष्य लिखा था।
3. गीता में श्रीकृष्ण ने लगभग 300 बार मैं, मेरा, मुझे सर्वनामों का प्रयोग योगावस्था में अपने लिये न करके परमात्मा तत्त्व का वर्णन किया है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वे स्वयं परमात्मा थे या परमात्मा का अवतार थे। जैसे वैष्णव भाई

मानते हैं । वस्तुतः वे श्रीराम की भाँति महापुरुष थे ।

4. गीता में 7 बार ओ३म् और 84 बार योग शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

5. वेदों का सार उपनिषदें हैं, उपनिषदों का सार गीता है और गीता का सार गीता के अठारहवें अध्याय का 66वां श्लोक है और इसका सार शरणागति है । इसका भाव है कि तू सब अधर्मों को छोड़ कर मेरी तरह परमात्मा की शरण में आ जा फिर निश्चय ही तू परमगति को प्राप्त होगा । तुझे आनन्दानुभूति होगी क्योंकि ईश्वर का दूसरा नाम आनन्द भी है ।

मेरी प्रश्नोत्तर सुनकर मेरे प्रिय मित्र स्व० रमेश कुमार मरीया भी आश्चर्यचकित रह गये । उन्होंने उस समय मेरे बारे में कहा था–

आप एक दिन महात्मा बन जाओगे और अपने परिवार का नाम भी रोशन करोगे ।

मेरे स्व० मित्र रमेश कुमार मडीया जी का एक पुत्र है जिसका नाम रजनीश मडीया है । रजनीश मडीया के एक पुत्र और एक पुत्री भी है । रजनीश मडीया आजकल एल.आई.सी. पटियाला में एच.जी.ए. (H.G.A.) पद पर कार्यरत है । बड़ी मेहनत व ईमानदारी से अपना काम कर रहे हैं । मेरे प्रिय मित्र श्री रमेश कुमार मडीया जी का 29.4.2013 को अचानक निधन हो गया । इसका मुझे बहुत दुःख हुआ । क्योंकि उन्होंने मुझे जीवन में बहुत ही अच्छी प्रकार गाइड किया था । अतः मैं उनका अत्यधिक कृतज्ञ हूँ ।

(3) सत्यपाल मोदी C/o विजय मोदी 346/15-ए चण्डीगढ़ मोबाईल 9316131859, 7973988193 (21.8.1942 ई०-27.11.2017 ई०) जी मेरे परममित्र थे क्योंकि वे श्री सनातन धर्म हाई स्कूल पटियाला में ही पढ़ते थे और इस स्कूल के सामने वाली गली में ही रहते थे । तभी से मेरा उनका परिचय हुआ था । आप सचिवालय हरियाणा सरकार चण्डीगढ़ से अवर

सचिव (Under Secretary) के पद से सेवानिवृत्त अधिकारी थे। आप सारी आयु अविवाहित रहे। वस्तुतः आप का जीवन संतों जैसा पवित्र था। आप विषय विचारों एवं मोह माया से कोसो दूर थे। आप संसार में फंसे हुए नहीं थे अपितु बसे हुए थे। आपका सर्विस मैटर, आयकर और समाचार पत्रों में विशेष ज्ञान था। जब कभी इन विषयों में आवश्यकता पड़ती थी तो मैं उन्हीं से परामर्श ले लिया करता था। वे ऐसा परामर्श देते थे कि जैसा बड़े-बड़े वकील भी नहीं दे सकते। वे आरम्भ से ही तीन अख़बार पढ़ा करते थे। वस्तुतः उन्हें अखबार पढ़ने का बड़ा शौक़ था। उनका अखबार ज्ञान बहुत अधिक था। आपने भी मुझे जीवन में कई बार मार्ग दर्शन किया। इस लिए मैं इनका भी अत्यन्त आभारी एवं कृतज्ञ हूँ।

आप अत्यंत बुद्धिमान और सहनशील व्यक्ति थे। आप मुझे मोहाली से पंचकूला भी मिलने आया करते थे। 15.10.2017 को अंतिम बार दीपावली का उपहार लेकर भी आप मेरे पास आये थे। दिनांक 20.10.2017 ई० को आप बीमार हो गये और मैं नरेश विज के साथ उनसे बीमारी के विषय में पूछने के लिये चण्डीगढ़ भी गया था। परन्तु दुर्भाग्यवश दिनांक 27.11.2017 ई० को उनका निधन हो गया। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। मैं उनके अहसानों का सदा अत्यंत कृतज्ञ रहूँगा।

(4) श्री लक्ष्मी नारायण मेहता कोठी नं. 480, सैक्टर 11, पंचकूला फोन नं. 0172-2570351 (5.10.1937 ई० से 11.11.2014 ई०) जी मेरे साथ हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड में काम करते थे। वे बहुत दयालु, ईमानदार और समझदार व्यक्ति थे। वे अपने संबंधियों एवं संत महापुरुषों की कभी-कभी आर्थिक सहायता भी करते थे। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सुखमय, शांतमय और आनंदमय जीवन व्यतीत किया करते थे। मरण पर्यन्त आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक ठाक था। आप लोगों के घरों में जाकर ''रामचरितमानस'' का पाठ भी किया करते थे। परन्तु आपको प्रस्तुत ग्रंथ के अर्थ समझ में नहीं आये थे और मैं उन्हें और उनकी धर्मपत्नी को

रामचरितमानस की चौपाइयों के अर्थ समझाया करता था। आपके एक पुत्र और दो पुत्रियां हैं पन्तु 11.11.2014 को अचानक प्रभु को प्यारे हो गये। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

(5) श्री सत्यदेव सहगल जी कोठी नं. 566, सैक्टर 8, पंचकूला फोन नं. 0172-2571047, (20.9.1937 ई० से 27.5.2009 ई०) महेन्द्र कॉलेज पटियाला में मेरे सहपाठी थे। आप अत्यंत बुद्धिमान और स्वाध्यायशील इन्सान थे। आपको अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों को पढ़ने का बड़ा शौक था। आपने महेन्द्र कॉलेज पटियाला से एम.ए. (अंग्रेज़ी) में दाखिला भी लिया परन्तु आर्थिक अभाव के कारण आपको कालेज छोड़ना पड़ा था। इसके पश्चात् 1961 ई० में सहायक के रूप में एल.आई.सी. (L.I.C.) विभाग में लग गये। तरक्की करते करते आप प्रशासनिक अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुये थे। आपकी चार पुत्रियाँ हैं जोकि अपने-अपने घरों में सुखमय जीवन व्यतीत कर रही हैं। आपसे मैंने जीवन में बहुत कुछ सीखा है जिससे मेरा जीवन ही बदल गया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विमला सहगल भी अत्यधिक नेक महिला है जो इस समय पुत्रों के साथ रह रही हैं। वस्तुतः मैं आपके द्वारा दिये गये परामर्शों से आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ। दिनांक 27.5.2009 को आप का अचानक निधन हो गया। ईश्वर आपकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

(6) श्री मनसाराम गोयल कोठी नं. 856, सैक्टर 12, पंचकूला दूरभाष नं. 0172-2582956 (6.5.1942 ई० से 6.8.2012 ई०) एच.एम.टी. पिंजौर से सेवानिवृत्त कर्मचारी थे। दुर्भाग्यवश आपकी धर्मपत्नी, पुत्र, पुत्रवधु, बहन आदि का 1991 ई० में एक दुर्घटना में अचानक निधन हो गया। इनमें से आपकी केवल एक सीमा नामक पुत्री ही बची थी। इतना बड़ा हादसा हो जाने के पश्चात् आपने अपना दिल नहीं तोड़ा और आप अपने पुत्र के साथ रहा करते थे। आप राधास्वामी पंथ के अनुयायी थे। आप में निष्काम सेवा की भावना भी अत्यधिक थी। आवश्यकता पड़ने पर आप मेरी सहायता किया

करते थे। आप को स्वाध्याय का बड़ा शौक था। आपने भी समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया था। इसलिये मैं आपका भी आभारी हूँ। दिनांक 6.8. 2012 को इनका निधन हो गया।

(7) श्री राजिन्द्र कुमार बस्सी कोठी नं. 827, सैक्टर 38ए चण्डीगढ़-160014 मोबाइल 9815878341, फोन 0172-2691532 हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड पटियाला से मेरे साथ काम करते थे। 1967 ई० में जब हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के दफ़्तर चण्डीगढ़ आये तो मैं 18.9.1967 ई० के मकान नं. 3255 सैक्टर 23डी में आपके साथ आकर रहने लगा। हम दोनों भाई की भाँति वहाँ पर दिनांक 18.9.1967 ई० से 31.12.1972 ई० तक इकट्ठे रहे। हम दोनों का आपस में बहुत प्रेम था। अतः दोनों का समय सुखपूर्वक एवं शांतिपूर्ण व्यतीत हुआ। परन्तु 2.12.1972 ई० को श्री राजेन्द्र कुमार बस्सी का विवाह हो गया और इसलिये यह मकान उनके लिए छोड़ दिया गया। इस दौरान उन्होंने मुझे बहुत सहयोग एवं सहायता प्रदान की इसके लिए मैं उनका भी अत्यंत कृतज्ञ हूँ। दिनांक 28.2.1999 ई० को आप हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड से उप अधीक्षक (Deputy Secretary) पद से सेवानिवृत्त हो गये। आपके कोई संतान नहीं हुई आपके एक दत्तक पुत्री है और जिसका विवाह आपने कर दिया। आप अपनी पत्नी के साथ सुखमय एवं शांतमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनका स्वास्थ्य ठीक रहे और दीर्घायु प्राप्त करें।

(8) श्री रोशन लाल अग्रवाल कोठी नं. 569, सैक्टर 1, पंचकूला दूरभाष नं. 0172-2580569 मेरे साथ पंजाब राज्य बिजली बोर्ड पटियाला और हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड चण्डीगढ़ पंचकूला में काम करते थे। आप बाल सदन सैक्टर 12 ए में निष्काम सेवा भी करते हैं। इसके अतिरिक्त आप कभी-कभी आर्य समाज के सत्संगों में भी जाते हैं। आप बहुत ईमानदार, स्वाध्यायशील, नेक और धार्मिक व्यक्ति हैं। आपको आचार्य रजनीश, ओशो

के साहित्याध्ययन में विशेष रुचि है । आप विगत कई वर्षों से मेरी पुस्तकों का लेखक परिचय भी लिखते रहे हैं । अतः इसके लिए मैं आप का अत्यंत आभारी हूँ । मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी दीर्घायु भी हो और स्वस्थ भी बने रहें तथा इसी प्रकार मेरी सहायता भी करते रहें । आपके एक पुत्र और पुत्री है । आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सुखमय एवं शांतमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

(9) श्री ओम् प्रकाश सैनी फ्लैट नं. 2 जी.एच. 19 एम.डी.सी. सैक्टर 5, पंचकूला मोबाइल 8556020549, दूरभाष नं. 0172-2556961 मेरे साथ पंजाब राज्य बिजली बोर्ड पटियाला और हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड पंचकूला में काम करते थे । पहले आप चण्डीगढ़ सैक्टर 23 में मेरे पड़ोस में रहा करते थे और मेरे निवास पर कभी-कभी मिलने भी आ जाया करते थे । आपका जीवन भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद का सुन्दर समन्वय है । आप अत्यंत साधारण, स्वाध्यायशील एवं भक्त व्यक्ति है । ''रामचरितमानस'' में आपकी विशेष रुचि है । आप मुझे पुस्तकें लिखने के लिए भी कभी-कभी सहयोग करते रहते हैं । अतः इसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ ।

आप प्राकृतिक चिकिस्ता द्वारा लोगों की बीमारियों के विषय में उन्हें निःशुल्क परामर्श देते रहते हैं । ऐसा करके आप निष्काम सेवा कर रहे हैं । आपकी धर्मपत्नी का नाम कमलेश सैनी है । वह एक सन्तोषी महिला है । आपके दो पुत्र विपिन और सपिन हैं । ये दोनों ही विवाहित हैं और सुखमय एवं शांतमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं । आप हरियाणा बिजली बोर्ड से सहायक (मुख्यालय) के पद से सेवानिवृत्त हैं । मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप की आयु दीर्घ हो और सदा स्वस्थ बने रहें ।

(10) श्री रामदास डांग कोठी नं. 1991, सैक्टर 4, गुड़गाँव मोबाइल 9899446474, 7011596735 मेरे साथ हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड में काम करते थे । आपका मेरे जीवन निर्माण में काफी बड़ा हाथ है । दिनांक

1.5.1983 ई० को मेरा पंचकूला में हुड्डा का सैक्टर 11 में प्लाट निकला तो आपने कहा था कि यह कोड़ियों के भाव मिला है और एक दिन करोड़ों का हो जाएगा। इसलिए इसे मत बेचना। आपकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त आप मुझे जीवन में अच्छी-अच्छी बातें बताते रहते हैं। अतः मैं आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ। आप विधुर हैं आपके पुत्र का नाम विक्रम डांग है वह अभी तक अविवाहित है परन्तु आपकी पुत्री डॉ. भूमिका डांग एम.डी. कर चुकी है और वह डॉक्टर के पद पर कार्य कर रही हैं। वह विवाहित हैं और अत्यंत ईमानदार, समझदार और मेहनती हैं। आप हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड से पी.ए. के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। आप आजकल सैशन कोर्ट गुड़गांव में वकालत कर रहे हैं। प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आपका भविष्य उज्ज्वल हो।

(11) श्री नरेश कुमार बंसल, यू.आर.बी. प्रिंटिंग प्रैस शैड नं. 2, रतपुर कालोनी पिंजौर का जन्म 8.2.1955 ई० में अम्बाला शहर में हुआ और आपके जन्म लेते ही आपकी माताजी का निधन हो गया। आप मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग हरियाणा की राजकीय पाठ्य पुस्तक प्रैस पंचकूला में काम करते थे। आपका विवाह श्रीमती उषा बंसल जोकि पटियाला की रहने वाली है से हुआ। आपके दो पुत्र और एक पुत्री थे। परन्तु दुर्भाग्यवश आपके छोटे पुत्र का लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। इसका आपको और आपके परिवार को अत्यंत दुःख है। श्री राजीव कपूर जो कि हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड में सीनियर ए.ओ. के पद पर कार्यरत हैं के माध्यम से 10 वर्ष पूर्व नरेश कुमार बंसल जी से मेरा परिचय हुआ था।

आप मेरी अनेक पुस्तकें छपवा चुके हैं। इस कार्य में आपने मेरी बहुत सहायता एवं सहयोग किया हैं। जैसे अन्य मुद्रक ग्राहकों को परेशान करते हैं आपमें ऐसी कोई भी आदत नहीं हैं। इनके सहयोग के द्वारा ही मैंने अपनी 35 पुस्तकों को इंटरनैट पर डलवाया है जो कि

www.dpkapoorbooks.co.in पर देखी जा सकती हैं। इसलिए मैं इनका और इनकी पुत्री का विशेष धन्यवाद करता हूँ। आप एक बहुत ही परिश्रमी, ईमानदार और नेक इन्सान हैं। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर इन्हें सुखद, स्वस्थ एवं दीर्घायु प्रदान करें जिससे ये समाज की इसी प्रकार से सेवा करते रहें।

(12) श्री जय किशन धीमान, गाँव कोट, जिला पंचकूला, मोबाइल 9468340497 का जन्म 17.3.1956 को पंचकूला के एक गाँव कोट में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। आप मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ में कार्यरत थे। आपको 1990 ई० में राजकीय पाठ्य पुस्तक प्रैस पंचकूला में स्थानांतरित कर दिया गया। आप अपने कार्य को बड़ी मेहनत, लगन और ईमानदारी से करते रहे हैं। आपके दो पुत्र और एक पुत्री है। दुर्भाग्यवश आपका बड़ा बेटा दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण चारपाई पर ही पड़ा है। वह चल फिर नहीं सकता। आजकल उसे कैंसर हो गया है जिस कारण उस का जीवन बड़ा कष्टमय बीत रहा है। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें शीघ्र ही स्वस्थ लाभ हो जाए। आपने मेरी अनेक पुस्तकों का कम्प्यूटरीकरण किया है। इस कार्य में मुझे कोई भी परेशानी नहीं हुई। आपने मेरी पुराण-परिचय नामक पुस्तक का सम्पादन किया।

आपके कार्य की प्रशंसा करते हुए मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि यदि आप न मिलते तो शायद मैं अपना कार्य बंद ही कर देता। आपके कारण ही मेरी 35 पुस्तकों को इंटरनैट पर डाला गया जिन्हें www.dpkapoorbooks.co.in पर देख जा सकता है। आपकी पत्नी श्रीमती सरला देवी एक सुशील एवं धर्मपरायण महिला है जो आपका हर कार्य में पूर्ण साथ देती है। आप नित्य प्रति यज्ञ करते हैं जिससे स्पष्ट हो जाता है कि आप पूर्ण धर्मपरायाण एवं प्रभु में श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति हैं। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आपका स्वास्थ और जीवन सुखमय हो जाए। आपके कार्यों के कारण ही मैं आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

(13) श्री राकेश विज जी कोठी नं. 305, सैक्टर 10, पंचकूला, फोन नं. 0172-2572682 मोबाइल 9417591485 अनेक वर्षों से आर्य समाज से जुड़े हुए हैं। आप विधुर है और एक लड़का तथा एक लड़की है जोकि विदेश में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अतः कभी-कभी आप विदेश में भी उनसे मिलने चले जाया करते हैं। आप पेशे से फोटोग्राफर हैं और आर्य समाज में लागत मूल्य पर फोटो खींचने का कार्य बड़ी लगन ओर निपुणता से करते हैं आपमें सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। यदि मैं कहूँ कि आप निष्काम कर्मयोगी हैं तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं होगी। आप मुझे आर्य समाज के सत्संगों में अपनी कार में बैठाकर ले जाते हैं। मैं इसके लिए आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ। प्रभु इन्हें लम्बी एवं स्वस्थ आयु प्रदान करें।

(14) श्री सरदारी लाल धवन मकान नं. 433, सैक्टर 11, पंचकूला फोन नं. 0172-2563659, मोबाइल 9417838090 होम गार्ड से एक एस०एस०ओ० (SSO) के पद से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचन धवन भी धार्मिक विचारों की महिला है। आपके तीन पुत्र जिनके नाम देविन्द्र नाथ, सुरिन्द्र नाथ और महेन्द्र नाथ हैं। वे सब अपना शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आप उर्दू के एक अच्छे शायर हैं। आपने उर्दू और हिन्दी में कई पुस्तकें भी लिखी हैं। आपको उर्दूशायरी का बहुत शौक़ है। आपको हरियाणा सरकार की ओर से 21000 रुपये का पुरस्कार भी मिल चुका है। आपका गला भी बहुत सुरीला है और आप उर्दू की ग़ज़लें गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हो।

वस्तुतः आपने मेरी पुस्तक 'शेर-ओ-शायरी' का सम्पादन भी बड़ी मेहनत और सच्ची लगन से किया है। यदि वे ऐसा न करते तो मेरी पुस्तक कभी भी छप न पाती क्योंकि उर्दू भाषा में मेरी इतनी पकड़ नहीं है। इसके अतिरिक्त मेरी अंग्रेज़ी की पुस्तक "Great Thoughts" का भी सम्पादन

बड़ी मेहनत और सच्ची लगन से किया है। यह आप का अत्यंत सराहनीय कार्य है। अतः मैं इस कार्य के लिए भी आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप दीर्घ आयु को प्राप्त हो और आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहे ताकि आप आगामी जीवन में भी मेरे पथ-प्रदर्शक बने रहें।

(15) श्री राम जी राजपाल कोठी नं. 1061, सैक्टर 11 पंचकूला, मोबाइल 9041280317 एच.एम.टी. पिंजौर से सेवानिवृत्त कर्मचारी हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती शकुंतला देवी है। आपका एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। आपके पुत्र आपके साथ ही रहते हैं और आपकी पुत्रियाँ अपने-अपने ससुराल में शांतिपूर्वक रह रही हैं। आपका पुत्र अत्यंत सुशील और आज्ञाकारी है। वस्तुतः आप संकट काल में भी मेरी बहुत सहायता करते हैं इसलिए मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ। आप एक ईमानदार और नेक इन्सान हैं। मैं जब भी आपको किसी काम के लिए बुलाता हूँ तो आप तुरन्त मिलने आ जाते हैं। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु आपको दीर्घायु और स्वस्थ जीवन प्रदान करे।

16. श्री लालचंद चौहान मकान नं. 591 सैक्टर 12, पंचकूला हरियाणा मोबाइल 8557057170 का जन्म 15.4.1945 ई० को ग्राम अलीका ज़िला पलवल हरियाणा में हुआ। आप की धर्मपत्नी का नाम श्रीमती विमला चौहान है जोकि एक अत्यंत संस्कारी एवं सुशीला महिला है। आपके चार बच्चे हैं एक लड़का जिसका नाम वरुण चौहान है और तीन लड़कियां जिनका नाम क्रमशः सावी, निशा और ऋचा है। आप स्वयं हरियाणा सरकार से राज्य विकास अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हैं। आप एक स्वाध्यायशील व्यक्ति हैं और अपने घर में प्रतिदिन यज्ञ भी करते हैं। आपने मुख्यतः तीन पुस्तकें लिख कर स्वाध्यायशील व्यक्तियों को निःशुल्क वितरण की हैं।

1. आर्य समाज की स्थापना क्यों?

2. ईश्वर ही विश्वकर्मा है ।

3. वेदानुकूल आचरण के बिना सुख समृद्धि कहाँ ? आदि

इसके अतिरिक्त आप और भी पुस्तकें लिख रहे हैं । आर्य प्रतिनिधि सभा, रोहतक की साप्ताहिक पत्रिका में लगभग 200 लेख प्रकाशित हो चुके हैं । ईश्वर व वैदिक मान्यताओं के विषय में कई पम्पलैट एक-एक हज़ार छपवा कर वितरित किए हैं । आप को आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रशंसापत्र भी प्रदान किया गया है । इससे प्रतीत होता है कि आप में परोपकार की भावना है । आपने मेरी अनेक पुस्तकों का सम्पादन बड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन से किया है । अतः इस पुण्य कार्य के लिये मैं आपका अत्यंत आभारी हूँ । मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप को स्वस्थ एवं दीर्घ आयु प्रदान करे ताकि आप इसी प्रकार समाज की निष्काम सेवा करते रहें ।

11. सेवानिवृत्ति

स्टोर के पश्चात् मेरी बदली सी.ए.ओ. (पैंशन शाखा) में हो गई । वहाँ पर भी मैंने सच्ची लगन और मेहनत से काम किया । अतः मेरे अधिकारी गर्ग जी और राजीव कपूर जी मेरे काम की प्रशंसा किया करते थे । वस्तुतः मुझे इस अनुभाग का काम बहुत पसन्द आया । लगभग एक वर्ष काम करने के पश्चात् 29.2.1996 ई० को मैं हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड से 32 वर्ष 1 मास और 13 दिन तक सेवा करने के बाद सेवानिवृत्त हो गया । सेवानिवृत्ति के दिन जब मैंने सारे बोर्ड के कर्मचारियों और अधिकारियों का धन्यवाद किया । उस समय मेरे शब्द थे–

तुम भी मुसाफ़िर हम भी मुसाफ़िर,
किसी मोड़ में मुलाक़ात फिर होगी ।

12. आदरणीया माताजी को धार्मिक ग्रंथों का श्रवण कराना

सेवानिवृत्ति के उपरान्त मैंने ''Your College'' के नाम से एक कॉलेज भी खोल लिया। 10वीं और 12वीं के कुछ विद्यार्थियों को मुझे पढ़ाने का मौका भी मिला। मेरे मित्र मुझे प्रोफेसर साहिब के नाम से पुकारने लगे क्योंकि एक प्रसिद्ध कहावत है जैसा काम वैसा नाम। परन्तु एक वर्ष के उपरांत मैंने यह कॉलेज बंद कर दिया, क्योंकि प्राथमिकता तो आदरणीया माता जी को धार्मिक ग्रंथों का श्रवण कराना ही था। माता जी तो कहती भी रही कि मैं कॉलेज बंद न करूँ और थोड़ा समय निकाल कर मुझे धार्मिक ग्रंथों का श्रवण कराते रहो। परन्तु एक ही समय में दो काम नहीं हो सकते थे। यहाँ तक कि एक दिन सैक्टर 10 पंचकूला से एक महिला अपनी बेटी को लेकर अंग्रेज़ी पढ़वाने हेतु लेकर आई। इस महिला को भी मैंने पहले चण्डीगढ़ में ट्यूशन पढ़ाया था और अब वह अपनी बेटी को 12वीं की अंग्रेज़ी की ट्यूशन लगवाने हेतु ले कर आई थी। परन्तु मैंने उसे भी इन्कार कर दिया और अपने कुछ नोट्स उसे दे दिये। इन्हीं नोट्स के आधार पर वह लड़की अच्छे अंक प्राप्त करके पास हो गई। अब भी मैं बी.ए. इंग्लिश और एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों को नोट्स उनके ही खर्चे पर फोटोस्टेट करवा कर दे देता हूँ। यदि कोई निर्धन छात्र या छात्रा हो तो उसे अपने खर्चे पर भी फोटोस्टेट कराके नोट्स दे देता हूँ। मैंने अपनी माता जी को उनके आदेशानुसार बड़े प्रेम और श्रद्धा से निम्नलिखित ग्रंथ सुनाये। इन्हें सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द आता था।

1. **भागवत पुराण**
2. **संक्षिप्त महाभारत (खण्ड 1 व 2)**
3. **बाल्मीकि रामायण**
4. **रामचरितमानस**
5. **आनंद स्वामी कृत साहित्य आदि**

परन्तु 25.2.2000 ई० को अचानक ही लगभग सायं 5 बजकर 45 मिनट पर आदरणीया माता जी 84 वर्ष में आयु में प्रभु को प्यारे हो गये। इस घटना ने मेरा सारा जीवन ही बदल दिया। मेरे जीवन में स्वाध्याय, ध्यान और आत्मचिंतन काफी बढ़ गया।

13. मुख्य प्रवचन

मैं कभी-कभी आर्य समाज चौंक आर्य समाज पटियाला में प्रवचन भी किया करता था। यह घटना 1968 ई० की है कि एक दिन अचानक मैं चण्डीगढ़ से पटियाला गया और आर्य समाज चौक आर्य समाज पटियाला में ''गायत्री मंत्र'' पर लगभग एक घंटा प्रवचन दिया। श्रोताओं ने इसको बहुत पसन्द किया। आर्य समाज पटियाला के समीप ही मेरे दादा जी दुकान पर बैठे थे। एक बहुत बूढ़े दम्पति ने मेरा यह प्रवचन सुना था। मैं आकर दुकान पर बैठ गया। वे बूढ़े दम्पति जिनकी आयु उस समय 90 वर्ष थी। वे आकर मेरे दादाजी से पूछने लगे कि यह लड़का कौन है। मेरे दादा जी ने उत्तर दिया यह मेरा पोता है और अभी-अभी यू.डी.सी. बन गया है और हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड चण्डीगढ़ में काम करता है।

मेरे दादा जी ने बूढ़े दम्पति से कहा कि यह विवाह नहीं करना चाहता। वे पूछने लगे क्यों नहीं करना चाहता। मेरे दादा जी ने उत्तर दिया मुझे तो मालूम नहीं, कृपया आप इससे ही पूछ लीजिये। उन्होंने मुझसे प्रश्न किया किया आप विवाह क्यों नहीं करना चाहते? मैंने उन्हें उत्तर दिया कि मेरे विवाह न करने के निम्नलिखित कारण हैं–

(1) आजकल राष्ट्र की आबादी अनावश्यक रूप से लगभग ढाई करोड़ प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है और इस कारण मैं राष्ट्र की अनावश्यक आबादी को रोकना चाहता हूँ क्योंकि यह सारी

समस्याओं और बुराइयों की जड़ है ।

(2) मैंने उस वृद्ध दम्पति से पूछा कि विवाह और दम्पति की क्या परिभाषा है? परन्तु न ही मेरे दादा ने और न ही वृद्ध दम्पति कोई ठीक उत्तर दे सके ।

मैंने उन्हें कहा कि विवाह का अर्थ है—विशेष उत्तरदायित्व ।

दम्पति शब्द का अर्थ दम्+पति से है । यास्कमुनि ''निरुक्त'' में लिखते हैं—दम्=दो और पति=स्वामी । अतः जब व्यक्ति विवाह कर लेता है तो घर के दो स्वामी हो जाते हैं । एक पति और दूसरा पत्नी । परन्तु मैं अकेला घर का स्वामी रहना चाहता हूँ । इसलिये विवाह नहीं करना चाहता ।

(3) मेरी अभी आर्थिक स्थिति भी इतनी सम्पन्न नहीं है कि मैं विवाह कर सकूँ क्योंकि यह जीवन की बहुत बड़ी जिम्मेवारी होती है ।

(4) विवाह से पूर्व व्यक्ति की दो टांगें होती हैं फिर जब पत्नी आ जाती है तो चार टांगें हो जाती हैं । चार टांगें जानवर की होती हैं । फिर कुछ समय बाद एक बच्चा हो जाता है तो छः टांगें हो जाती हैं । छः टांगें मक्खी की होती हैं । फिर जब दूसरा बच्चा पैदा हो जाता है तो आठ टांगें हो जाती हैंऔर आठ टांगें मकड़ी की होती हैं । तब व्यक्ति सारी उम्र मक्कड़जाल में फंसा रह जाता है ।

(5) विवाह में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अपहरण होता । परन्तु मैं स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ । तब मैंने अपने दादा जी और वृद्ध दम्पति से कहा—

बीबी न बच्चे हम सबसे अच्छे ।

मेरी बातें सुनकर मेरे आदरणीय दादा जी और उनके मित्र वृद्ध दम्पति अत्यधिक प्रभावित हुये । मुझे याद है कि मेरे दादा जी ने

उस समय मुझे आशीर्वाद दिया था—

देख लेना मेरा यह पोता एक दिन महात्मा बन जायेगा और सारे वंश का नाम रोशन करेगा क्योंकि यह भोगियों में योगी है।

मैंने अपने दादा जी का धन्यवाद किया और कहा—

जितना कम सामान रहेगा उतना तू आसान रहेगा।
जितनी भारी गठरी होगी उतना तू परेशान रहेगा।।

गोपाल दास 'नीरज'

मैंने पटियाला, चण्डीगढ़, पंचकूला, अम्बाला आदि विभिन्न नगरों और प्राईवेट घरों में सैकड़ों प्रवचन किये। परन्तु इनमें से मुख्य प्रवचनों की सूची अधोलिखित रेखाओं में प्रस्तुत की जाती है—

1. ज्ञानगंगा, 2. ज्ञानगंगा, 3. ज्ञानगंगा, 4. ज्ञानगंगा, 5. ज्ञानगंगा, 6. वेदप्रश्नोत्तरी, 7. उपनिषद्प्रश्नोत्तरी, 8. रामायणप्रश्नोत्तरी, 9. गीताप्रश्नोत्तरी, 10. सत्यार्थप्रश्नोत्तरी, 11. ओ३म्, 12. मूर्तिपूजा, 13. अवतारवाद, 14. स्वाध्याय, 15. सत्संग, 16. आत्मबोध, 17. प्रेम, 18. दान, 19. नारी, 20. स्वास्थ्य, 21. गायत्रीरहस्य, 22. जीने की कला, 23. भद्र प्राप्ति, 24. मानव बन, 25. कल्याणकारी बनो, 26. हम सदा प्रसन्न रहें, 27. मधुर वाणी, 28. उपास्यदेव, 29. यज्ञसंस्कृति, 30. अभिमान, 31. ब्रह्मचर्य, 32. गृहस्थ, 33. मन, 34. उत्तम स्वभाव, 35. शरणागति, 36. नमस्ते, 37. कामना, 38. त्रैतवाद, 39. सौरमण्डल, 40. शिक्षा और दीक्षा, 41. गौमाता, 42. संस्कार, 43. समय, 44. अध्यात्म, 45. भारतीय संस्कृति, 46. महर्षि दयानंद, 47. स्वामी श्रद्धानंद, 48. पंडित लेखराम, 49. महात्मा हंसराज, 50. पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, 51. गणतंत्र दिवस, 52. स्वतंत्रता दिवस आदि।

प्रिय पाठकगण! ऊपरलिखित प्रवचनों में से केवल निम्नलिखित दो प्रवचन आपके अध्ययन के लिए प्रस्तुत करता हूँ। कृपया आप इनका अध्ययन, मनन और आत्मसात् ध्यानपूर्वक कीजियेगा—

भद्र आत्माओ !

प्रवचन नं. 1

रामायणप्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कौन सा है? इसको लेखक ने कितने समय में लिखा और इसमें कितने काण्ड हैं?

उत्तर विश्वविख्यात कवि तुलसीदास द्वारा लिखित ''रामचरितमानस'' हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। उन्होंने इसका श्रीगणेश श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में रामनवमी के दिन मंगलवार दिनांक 30.3.1574 ई० को किया और इसकी इति श्रीराम के विवाह के दिन 25.11.1576 ई० को की। इस प्रकार इस के लिखने में 2 वर्ष, 7 मास और 26 दिन लगे। इस महाकाव्य में 7 काण्ड हैं, इसमें 16,000 शब्द और 72 भाषाओं का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 2. काण्ड का क्या अर्थ है और ''रामचरितमानस'' में विभिन्न काण्डों में कितने दोहे, छंद, चौपाइयां आदि हैं?

उत्तर काण्ड का अर्थ पर्व, सन्धि, शाखा है। इसी प्रकार रामकथा मंदाकिनी अनेक टेढ़े-मेढ़े रास्तों से निकलती है किन्तु करुणा का माधुर्य सम्पूर्ण कथा में ज्यों का त्यों बना रहता है। यह नदी विषाद, कौतक, हास्य, आश्चर्य, भय, प्रेम, नैराश्य और तर्क से होती हुई निकलती है लेकिन इसका मुख्य अन्तर्प्रवाह है धर्म और करुणा। जिस प्रकार व्यक्ति गन्ने को पीलकर केवल उसका मधुर रस ही पीता है। जिस प्रकार मधुमक्खी फूलों के रूप सौन्दर्य की परवाह न करते हुए उसका मधु ही चूसती है। जिस प्रकार पतंगा गर्मी और अपनी दुर्गति की परवाह न करते हुए अग्नि की लौ के चारों ओर मंडराता है उसी प्रकार साधक को भी अन्य विषयों पर ध्यान न देते हुए ''रामचरितमानस'' में प्रवाहित करुणरस को ग्रहण करना

चाहिये। ''रामचरितमानस'' के विभिन्न काण्डों में छंदों, दोहो, चौपाइयों आदि की संख्या का विवरण निम्नलिखित है–

1.	बालकाण्ड	361
2.	अयोध्याकाण्ड	326
3.	अरण्यकाण्ड	46
4.	किष्किंधाकाण्ड	30
5.	सुन्दरकांड	60
6.	लंकाकाण्ड	121
7.	उत्तरकाण्ड (प्रक्षिप्त)	130
	कुल जोड़	**1074**

प्रश्न 3. ''रामचरितमानस'' का कौनसा काण्ड सर्वश्रेष्ठ है और क्यों?

उत्तर अरण्यकाण्ड। क्योंकि इसमें श्रीराम द्वारा लक्ष्मण को दिया गया ज्ञानोपदेश और शबरी को नवधा भक्ति का दिया हुआ उपदेश ही मुख्य है। इसके अतिरिक्त इसमें श्रीराम ने कुशलता एवं दूरदर्शिता का परिचय देकर समूचे राष्ट्र को जोड़ने का महान् कार्य किया। इस काण्ड में रावण ने सीताहरण किया और श्रीराम ने इस चुनौती को स्वीकार किया तथा स्थान-स्थान जाकर स्वयं राष्ट्र पर आई विपत्ति से लड़ने के लिये लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करके उन्हें तैयार किया। इसमें अरण्यकाण्ड का वही महत्त्व है जो महाभारत में 'गीता' का और भागवतपुराण में '11वें स्कन्द' का है।

प्रश्न 4. श्रीराम के बहनोई और बड़ी बहन का क्या नाम था?

उत्तर शृंगी ऋषि और बड़ी बहन का नाम शांता।

नोट -- महाराजा दशरथ ने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अपनी पुत्री शांता को अंग देश के राजा रोमपाद एवं वर्षिणी की दत्तक पुत्री बना दिया क्योंकि वर्षिणी कौशल्या माता की बड़ी बहन निःसन्तान थी।

–सत्य रामायण पृ. 49-51

प्रश्न 5. हनुमान (महावीर, मारुति, केशरीनंदन, पवनपुत्र) के माता-पिता और भाइयों के क्या-क्या नाम थे? महावीर हनुमान का क्या अर्थ है? क्या हनुमान के पूँछ थी?

उत्तर हनुमान के पिता का नाम केशरी और माता का नाम अंजना था। हनुमान के 5 भाइयों के नाम – मतिमान, श्रुतिमान, कीर्तिमान, गयमान एवं धरतीमान थे। महावीर वह होता है जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय पाई हो और हनु का अर्थ ठोड़ी होता है क्योंकि हनुमान जी अखण्ड ब्रह्मचारी थे और उनकी ठोड़ी कुछ लम्बी थी। इस कारण उन्हें महावीर हनुमान कहा जाता है। वस्तुतः उस काल में पूंछ वानरों का विशेष राष्ट्रीय चिह्न था जिस को वाल्मीकि रामायण में लांगूल नाम से पुकारा गया है। अतः हनुमान जी की कोई पूंछ नहीं थी।

प्रश्न 6. रावण के पिता का क्या नाम था और उनकी कितनी रानियां थीं और रावण के दस सिरों का क्या अर्थ है?

उत्तर रावण के पिता का नाम विश्रवा ऋषि था और उनकी निम्नलिखित तीन रानियां थीं--

(1) बिंदुमती जिसके पुत्र का नाम कुबेर था।

(2) कैकसी जिसके पुत्रों का नाम रावण और कुम्भकर्ण था और पुत्री का नाम शूर्पणखा था।

(3) राका जिसके पुत्र का नाम विभीषण और पुत्री का नाम त्रिजटा था।

रावण के दस सिर निम्नलिखित दस बुराइयों के प्रतीक थे-- 1. क्रोध, 2. कपट, 3. क्रूरता, 4. कहर, 5. प्रतिकार, 6. अहंकार, 7. लोभ, 8. मोह, 9. वैर, 10. हठ।

इसके विषय में ''सत्यरामायण'' में लिखा है--

रावण के दस शीश नहीं थे। परन्तु उसको दस मस्तिष्कों का बुद्धिबल प्राप्त था। इस तथ्य का संकेत वह दस शीशों का मुकुट पहन कर देता था। उसके दस शीश, काम, क्रोध, लोभ, वासना, घमण्ड, केन्या, मानस बुद्धि, चित्त एवं अहंकार के परिचायक थे –पृ० 395

कुछ विद्वानों का विचार है कि रावण 4 वेद 6 शास्त्र का प्रकांड पंडित था। अतः उसमें 10 सिरों के समान बुद्धि थीं इसी कारण उसे 10 सिरों वाला कहा जाता है। परन्तु उसकी बुद्धि शुद्ध नहीं थी।

प्रश्न 7. सीता हरण के मुख्य क्या कारण थे?

उत्तर (1) दशरथ के साथ रावण की स्थायी शत्रुता थी। उसने अनुभव किया था कि दशरथ के पिता अज के कारण ही उसके पिता विश्रवा को विशाल कौशल साम्राज्य से वंचित होना पड़ा था अन्यथा आज वह उसका स्वामी होता।

(2) दशरथ ने अनेक बार असुरों के विरुद्ध युद्ध में इन्द्र की सहायता की जिसके कारण उसे उतनी ही बार पराजय का मुख देखना पड़ा था।

(3) उसके सौतेले भाई कुबेर के प्रति प्रतिशोध की भावना।

(4) वेदवती द्वारा उसका अपमान अभिशाप और फिर आत्महत्या।

(5) कुबेर के पुत्र नल कुबेर तथा उसकी पत्नी रम्भा द्वारा उसका अपमान।

(6) अन्ततः परमप्रिय बहिन शूर्पणखा का अपमान।

--सत्य रामायण पृ० 323

प्रश्न 8. मरते समय रावण ने लक्ष्मण को क्या ज्ञान दिया था?

उत्तर जिस समय रावण मरणासन्न अवस्था में था, उस समय श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि इस संसार से नीति, राजनीति और शक्ति का प्रकाण्डपंडित विदा ले रहा है, तुम उसके पास जाओ और उससे जीवन की कुछ ऐसी शिक्षा ले लो जो और कोई नहीं दे सकता। श्रीराम की बात मानकर लक्ष्मण मरणासन्न अवस्था में पड़े रावण के सिर के नजदीक जाकर खड़े हो गये।

रावण ने कुछ नहीं कहा। लक्ष्मण वापस राम के पास लौट आये। तब श्रीराम ने कहा कि यदि किसी से ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसके चरणों के पास खड़े होना चाहिए न कि सिर की ओर। यह बात सुनकर लक्ष्मण जाकर रावण के पैरों की ओर खड़े हो गये। उस समय प्रकांडपंडित रावण ने लक्ष्मण को निम्नलिखित 3 बातें बताईं जो जीवन में सफलता की कुंजी हैं।

(1) पहली बात जो रावण ने लक्ष्मण को बताई वह यह थी कि शुभ कार्य जितनी जल्दी हो कर डालना और अशुभ कार्य को जितना टाल सकते हो टाल देना चाहिए। मैं श्रीराम को पहचान न सका और उनकी शरण में आने में देरी कर दी। इसी कारण मेरी यह हालत हुई।

(2) दूसरी बात यह कि अपने शत्रु को अपने से कम शक्तिशाली नहीं समझना चाहिए, मैं यह भूल कर गया। मैंने जिन्हें साधारण वानर और भालू समझा उन्होंने मेरी पूरी सेना को नष्ट कर दिया। मैंने जब ब्रह्मा जी से अमरता का वरदान मांगा था तब मनुष्य और वानर के अतिरिक्त कोई मेरा वध न कर सके ऐसा कहा था क्योंकि मैं मनुष्य और वानर को तुच्छ समझता था। मेरी यह गलती भी थी।

(3) रावण ने लक्ष्मण को तीसरी बात यह बताई कि सामान्यतः अपने जीवन का कोई राज हो तो उसे किसी को भी नहीं बताना चाहिए, यहाँ भी मैं चूक गया क्योंकि विभीषण मेरी मृत्यु का राज जानता था। यह मेरी जीवन की सबसे बड़ी भूल थी।

प्रश्न 9. श्रीराम की सेना ने कितने दिनों मे कितना लम्बा पुल लंका पर चढ़ाई करने के लिए बाँधा था और राम-रावण युद्ध कितने दिन तक चला था?

उत्तर श्रीराम की सेना ने 5 दिन में 100 योजन लम्बे पुल का निर्माण कर लंका पर चढ़ाई करने के लिए किया था। राम एवं रावण का 18

दिन तक युद्ध चला था। जैसे सत्य साईं बाबा लिखते हैं–

राम-रावण युद्ध भी स्वयं में अतुलनीय युद्ध था।

अठारह दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा।

–राम-कथा रस-वाहिनी पृ० 614

नोट – राम और रावण के युद्ध के अंतिम दिन राम ने रावण पर ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया और रावण ने उच्च ध्वनि से दोनों हाथों को उठाते हुये कहा था–

राम रुको, रुको! मुझे मत मारो, मैं तुम्हें तुम्हारी सीता वापस कर दूँगा। परन्तु मरणासन्न रावण अशोक वाटिका की ओर दौड़ा ताकि वह अपनी मृत्यु से पूर्व सीता का वध कर सके और जिसके वियोग में राम मर जायें। परन्तु अशोक वाटिका के द्वार पर पहुँचते ही ब्रह्मास्त्र ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया और उसकी मृत्यु के अंतिम क्षण में उसके मुख से निकला 'हेराम!'

–सत्य रामायण पृ० 502

प्रश्न 10. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का विवाह कितनी आयु में हुआ, विवाह के पश्चात् वे कितने वर्ष महलों में रहे, कितनी आयु में वे वनों में गये, कितनी आयु में उनका राज्याभिषेक हुआ और कितने वर्षों तक उन्होंने अयोध्या पर राज्य किया?

उत्तर 25 वर्ष की आयु में श्रीराम का विवाह हुआ। विवाह के पश्चात् 12 वर्ष तक वे महलों में रहे। 37 वर्ष की आयु में वे वनों को चले गये और 14 वर्ष तक वनों में रहे। 51 वर्ष की आयु में उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने 30 वर्ष 1 मास और 20 दिन तक अयोध्या पर राज्य किया।

नोट – कई पुस्तकों मे लिखा है कि श्रीराम ने 11000 वर्ष तक अयोध्या पर राज्य किया। इस का भाव है 11000 दिन अर्थात् 30 वर्ष, 1 मास और 20 दिन।

–स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती कृत मर्यादा पुरुषोत्तम राम पृ० 124

रामचरितमानस के 10 अत्यंत महत्त्वपूर्ण पद्यांशों की व्याख्या

बालकाण्ड

(1) **बिनु सतसंग विवेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ।**
सत संगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला । ।
सठ सुधरहिं सतसंगति पाइ । पारस परस कुघात सुहाई ।
विधिवस सुजन कुसंगत पर ही । फनि मनि गुण अनुसरही ।

—बालकाण्ड 4.5

सत्संग के बिना विवेक नहीं होता और प्रभुकृपा के बिना सत्संग की प्राप्ति नहीं होती । सत्संग कल्याण का मूल है । इसकी प्राप्ति ही फल है और सब साधनों को तो फूल समझना चाहिये । सत्संग के प्रभाव से दुष्ट व्यक्ति भी सुधर जाते हैं जैसे परसमणि के स्पर्शमात्र से लोहा भी सोना हो जाता है । यदि दुर्भाग्यवश सज्जन कुसंग में पड़ जाते हैं तो वे वहाँ भी साँप की मणि के समान अपने गुणों का ही प्रकाश करते हैं । वस्तुतः सत्संग का मानव जीवन में अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि व्यक्ति जैसी संगति करता है वह वैसा ही हो जाता है । जैसे एक हिन्दी कवि के शब्दों में—

जैसा संग वैसा रंग ।
जैसा पानी वैसी वाणी ।
जैसा अन्न वैसा मन ।
जैसा ख्याल वैसा व्यवहार ।
जैसी करनी वैसी भरनी ।

सत्संग शब्द सत् + संग से बनता है सत् का अर्थ है परमात्मा और संग का अर्थ है मिलन । सत्संग भी निम्नलिखित चार प्रकार का होता हैं प्रभुमिलन और प्रभुप्रेम ही सर्वश्रेष्ठ सत्संग है । इस प्रकार के सत्संग के उज्ज्वल उदाहरण रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में शबरी एवं सुतीक्षा नामक भक्तिनों के मिलते हैं । दूसरी प्रकार का सत्संग संतों-महात्माओं का होता है जैसे महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद का

सत्संग आदि । तीसरी प्रकार का सत्संग सच्चे भक्तों, वीतरागियों का सत्संग है जैसे याज्ञवल्क्य के सत्संग से मैत्रेयी को ब्रह्मज्ञान हो गया और महर्षि उद्दालक के सत्संग से श्वेतकेतु को भी ब्रह्मज्ञान हो गया । चौथी प्रकार का सत्संग आर्ष ग्रंथों एवं सत्शास्त्रों का स्वाध्याय ही सत्संग है ।

दरअसल यदि साधारण व्यक्ति बोलता है वार्तालाप बन जाता है । यदि प्रोफेसर बोलता है तो लैक्चर बन जाता है । यदि कोई नेता बोलता है तो वह भाषण बन जाता है । यदि कोई पंडित रोज़ी-रोटी के लिए बोलता है तो वह कथा कहलाती है जैसे रामकथा, भागवतकथा आदि । परन्तु यदि कोई सच्चा संत बोलता है तो वह सत्संग कहलाता है । अतः सत्संग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए ''सेवक'' जी ने कितना सुन्दर लिखा है–

आदत है अगर कहीं जाने की, तो सत्संग में तुम जाया करो ।
आदत है अगर कमाने की तो अच्छे कर्म कमाया करो ।
आदत है अगर अपनाने की तो सब के गुण अपनाया करो ।
आदत है अगर गुस्सा खाने की तो मन पर गुस्सा खाया करो ।
आदत है अगर शर्माने की तो पापों से शर्माया करो ।
आदत है जो 'सेवक' गाने की तो गीत प्रभु के गाया करो ।।

इसी प्रकार एक उर्दू शायर के शब्दों में–

हर रोज उस रब की बात होती है ।
पर सत्संग में तो उससे मुलाक़ात होती है ।।
बहुत लोग उसकी रहमतों को तरसते हैं ।
पर सत्संग में तो उसी रहमतों की बरसात होती है ।।

(2) आकर चारि[1] लाख चौरासी । जाति जीव जल थल नभ बासी ।।
सीय राममय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग[2] पानी[3] ।।

7(घ).1

(1) अण्डज, पिण्डज, उद्भिज, स्वेदज चार प्रकार के जीव (2) दोनों (3) हाथ ।

इस संसार में 84 लाख योनियों में चार प्रकार के जीव जरायुज, अण्डज, उद्‌भिज, स्वेदज समूचे ब्रह्माण्ड में रहते हैं । उन सबसे भरे हुए इस समस्त संसार को सीताराममय जानकर मैं करबद्ध प्रणाम करता हूँ । वस्तुतः तुलसीदास श्रीराम के अनन्य एवं ज्ञानी भक्त थे । इसी कारण उन्हें संसार के कण-कण में सीता राम ही नजर आते थे । क्योंकि जैसी व्यक्ति की दृष्टि होती है वैसी उसे सृष्टि नजर आती है । इसी प्रकार गुरु रामदास जी ''श्रीगुरुग्रंथसाहिब'' में लिखते हैं–

आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सम लोइ ।।
आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ।।
आपे ही सुतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ।।
मेरे मन मैं हरि बिनु अवरु न कोइ ।।

–महला 4 पृ० 605

अण्डज, पिण्डज, उद्‌भिज एवं स्वेदज अर्थात् चार प्रकार के प्राणियों की उत्पत्ति हुई है । अण्डे से पैदा होने वाले जीवन जैसे कबूतर, चिड़िया, सर्प आदि को अण्डज कहते हैं । जेर से पैदा होने वाले जीव जैसे मानव, पशु पिण्डज, उद्‌भिज पृथिवी से पैदा होने वाली वनस्पति जगत् जैसे वृक्ष, लता आदि एवं स्वेदज मक्खी, मच्छर कीटाणु आदि इन सब में स्वयं परमात्मा है । सारे संसार में वही परमात्मा है । जैसे मोतियों की माला में एक धागा और उसमें पिरोए हुए मोती होते हैं । उसी प्रकार यह सारा संसार परमात्मा का ही है । स्वयं एक सूत के समान एवं उसमें पिरोए मोतियों के समान है । सूत भी वो ही मोती भी वह ही स्वयं ही वह सूत्रधार है । अपनी खुशी से जब वह प्यारा अपनी शक्ति से सूत खींचता है तो सारी रचना ढह जाती है । मेरे मन में परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है । परमात्मा सर्वव्यापक है ।

अयोध्याकाण्ड

(3) **रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ[1] बरु[2] बचनु न जाई ।**

(1) जाए (2) भले ही –27.2

जिस समय कैकेयी राजा दशरथ द्वारा दिये गये दो वर माँगती है और राजा दशरथ कहते हैं कि दो न चार वर ले लो । उस समय राजा दशरथ

कैकेयी से कहते हैं कि रघुकुल में यह प्रथा सदा से चली आई है कि रघुवंशी के प्राण भले ही चले जाए परन्तु दिये हुये वचन का निर्वाह करता है ।

(4) **सुनहु भरत भावी[1] प्रबल[2] बिलखि[3] केहेउ[4] मुनिनाथ[5] ।**
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपयसु बिधि[6] हाथ ।। −171

(1) होनहार या भाग्य (2) बलवान् (3) दुःखी होकर (4) कहा (5) वशिष्ठ मुनि (6) विधाता ।

जिस समय भरत ने अपने पिता राजा दशरथ का मृतक संस्कार कर दिया । इसके बाद अन्य लोगों के साथ वसिष्ठ मुनि ने भरत और शत्रुघ्न को बुलाया और उन्होंने कहा कि राजा दशरथ धर्म का पालन करते-करते अपना शरीर त्याग गये और वे बातें करते-करते शोक सागर में डूब गये । उस समय वशिष्ठ मुनि दुःखी होकर भरत जी से कहते हैं– सुनो भरत ! यह होनहार या भाग्य बड़ा बलवान् होता है । हानि लाभ, जीवन मरण और यश अपयश यह सब परमात्मा के हाथ में हैं न कि व्यक्ति के । इन पर व्यक्ति का कोई भी वश नहीं चलता ।

(5) **करम प्रधान बिस्व करि राखा ।**
जो जस[1] करइ सो तस[2] फलु[3] चाखा ।। −218.2

(1) जैसा (2) वैसा (3) भोगता है ।

यह उस समय का प्रसंग है जब बृहस्पति इन्द्र से कहते हैं कि श्रीराम को अपना सेवक परमप्रिय है । वे अपने सेवक की सेवा में सुख मानते हैं और सेवक के साथ वैर करने से बड़ा भारी वैर मानते हैं । वस्तुतः परमात्मा सम है वह किसी से न प्रेम रखते हैं न रोष । इस संसार में कर्म ही प्रधान्य है जो व्यक्ति जैसा करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है । महर्षि वेदव्यास ने महाभारत में लिखा है–

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं ।

जो किसी व्यक्ति ने शुभ या अशुभ कर्म किये हैं उनका फल अवश्य ही उसे भोगना पड़ेगा । संसार में इसके बचने को कोई भी उपाय नहीं है ।

अरण्यकाण्ड

(6) **क्रोध मनोज[1] लोभ मद माया । छूटहिं सकल गम कीं दाया[2] ।।**
सो नर इंद्रजाल[3] नहिं भूला । जा पर होइ सो नट[4] अनुकूला ।।
उमा कहँउ मैं अनुभव अपना । सत हरि भजनु जगत सब सपना ।।

–38(ख) 2.3

(1) काम (2) कृपा (3) मायाजाल (4) नटराज प्रभु ।

शिवजी पार्वती से कहते हैं कि श्रीराम गुणातीत है चराचर जगत् के स्वामी और सेवक के हृदय को जानने वाले हैं । उन्होंने ही कामी लोगों की दीनता दिखलायी है और विवेकी पुरुषों के मन में वैराग्य को दृढ़ किया है । इस प्रकार आगे उपदेश देते हुये शिव कहते हैं कि हे पार्वती ! क्रोध, काम, लोभ, मद और माया– ये सभी विकार प्रभुकृपा से ही छूट जाते हैं । वह नटराज प्रभु जिस पर प्रसन्न होते हैं वह व्यक्ति मायाजाल में नहीं फंसता । हे उमा ! मैं तुम्हें अपना अनुभव बतलाता हूँ कि प्रभुभजन ही सत्य है और यह सारा संसार तो स्वप्न की भाँति क्षणभंगुर है ।

सुन्दरकाण्ड

(7) **निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।।**

–43.3

विभीषण जब अपने बड़े भाई रावण को छोड़कर श्रीराम की शरण में आना चाहता है । सुग्रीव, हनुमान आदि को उस पर शक होता है । जब सुग्रीव उसके आगमन की सूचना श्रीराम को देता है तो राम उसे अपनी शरण में आने की आज्ञा देते हैं । उस समय श्रीराम, सुग्रीव को समझाते हुए कहते हैं कि यदि विभीषण के हृदय में पाप होगा तो वह उनके सामने नहीं आयेगा । यदि वह पापों का परित्याग करके प्रायश्चित करना चाहता है तो उसे अवश्य अवसर प्रदान करना चाहिये । अतः उसे मेरी शरण में ले आइये–

उस समय श्रीराम सुग्रीव को उपदेश देते हुये कहते हैं कि सुग्रीव ने विभीषण को कपटी कहा था। परन्तु श्रीराम इसका खण्डन करते हुए कहते हैं कि मैं दुष्ट हृदय वाले व्यक्ति को नहीं प्राप्त होता क्योंकि मुझे छल, छिद्र व कपट अच्छा नहीं लगता। अतः जो मनुष्य शुद्ध मन वाला होता है जिसके भाव एवं विचार निर्मल होते हैं वही मेरी कृपा प्राप्त कर मेरे दर्शनों को आता है। इसका दूसरा भाव यह भी है कि यदि कोई कपट छलयुक्त है मेरी शरण में आ जाने से वह निर्मल हो जाता है। कवि के कहने का भाव यह है कि प्रभुमिलन के लिये हृदय की शुद्धता परमावश्यक है। यदि आप का हृदय शुद्ध हो गया तो अहंकार भी नहीं रहेगा।

उत्तरकाण्ड

(8) **बड़ें भाग मानुष तनु पावा। सुर[1], दुर्लभ[2] सब ग्रंथन्हि गावा।।**
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा।।
सो[3] परत्र[4] दुख पावइ। सिर धुनि धुनि पछिताइ।।
कालहि कर्महि ईस्वरहि। मिथ्या दोस लगाइ।।
एहि तन कर फल विषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाईं।।
नर तनु पाइ विषयँ मन देहीं। पलटि सुधा ते[5] सठ[6] विष लहीं।।

—42.4, 43.I.2

(1) देवता (2) कठिन (3) वह (4) व्यक्ति (5) अमृत (6) दुष्टा

श्री राम अपने नगरवासियों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि यह मानव जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। तभी तो मानव को परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति माना गया है। सब ग्रंथों में यही कहा गया है कि मानव चोला बड़ी तपस्या एवं कठिनता से प्राप्त होता है। यह साधन धाम एवं मुक्ति द्वार माना गया है। इस मानव शरीर को धारण करके जिसने परलोक को न सुधारा तो वह व्यक्ति वहाँ भी दुःख को प्राप्त होता है। सिर पीट पीटकर पछताता और ताप सहन करता है और अपने दोष न

समझकर काल, धर्म और परमात्मा पर झूठा दोष लगाता है । हे भाई ! इस शरीर को प्राप्त होने का फल विषय भोग नहीं है । सांसारिक भोगों की तो बात ही छोड़िये स्वर्ग का भोग भी बहुत थोड़ा है और अंत में दुःखदाई है । इसलिये जो व्यक्ति मानव शरीर पाकर विषयों में मन लगा देते हैं वे मूर्ख अमृत की अपेक्षा विष प्राप्त करते हैं । कवि के कहने का भाव यह है कि मानव जीवन में भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद का सुन्दर समन्वय होना चाहिये तभी जीवन में सुख, शांति और आनन्द की वृष्टि हो सकती है ।

(9) **ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुखरासी ।**
सो मायाबस भयउ गोसाईं । बँध्यो कीर मरकट की नाईं । ।

—116(ख) 1.2

काकभुशुण्डि गरुड जी को ज्ञान व भक्ति में अंतर समझाते हुए कहते हैं कि आत्मा और परमात्मा दोनों चेतन तत्त्व हैं और यह आत्मतत्त्व अविनाशी, चेतन, स्वाभाविक, निर्मल एवं सुखराशि है । परन्तु यह आत्मा तोते और बंदर की भाँति स्वयं मोह माया के जाल में बँधी हुई है । तोतो को पकड़ने के लिये बहेलिया पृथ्वी पर दो लकड़ियां गाड़ कर उन्हें एक नली से बाँध देता है और पृथ्वी पर दाने डाल देता है । जब तोते दाने चुगने आते हैं और नली पर दाने चुगने के लिये झुकते हैं तब नली घूम जाती है और वे उलटे लटक जाते हैं । बहेलिया आकर उन्हें पकड़ लेता है । इसी प्रकार वानरों को पकड़ने के लिए तंग मुँह के चनों से भरे हुए घड़ों को पृथ्वी में गाड़ देते हैं । जब वानर आकर घड़ों में अपने-अपने हाथ डालते हैं और चनों से मुट्ठी भर जाने से उनका हाथ घड़ों से बाहर नहीं निकलता है और बहेलिया आकर उन्हें पकड़ लेता है ।

वस्तुतः वैदिक सिद्धान्त के अनुसार आत्मा, परमात्मा एवं प्रकृति तीन अनादि एवं स्वतंत्र सत्ताए हैं । इसे ही त्रैतवाद के नाम से पुकारा जाता है । परन्तु कुछ विद्वानों ने आत्मा को परमात्मा का अंश इसलिये कह

दिया क्योंकि दोनों अनादि व चेतन सत्ताएँ हैं । आत्मा अल्पज्ञ है और परमात्मा सर्वज्ञ है । अतः वह परमात्मा का अंश न होकर एक स्वतंत्र, अनादि सत्ता है ।

(10) **संत हृदय नवनीत[1] समाना । कहा कबिन्ह[2] परि[3] कहै न जाना ।**
निज परिताप द्रवइ नवनीता । पर दुख द्रवहिं[4] संत सुपुनीता[5] । ।

–124(ख).4

(1) मक्खन (2) कवियों (3) परन्तु (4) दुःखी होना (5) परम पवित्र संत

गरुड़ काकभुषुण्डि को उपदेश देते हुए कहते हैं कि सच्चे संतों का हृदय मक्खन के समान कोमल होता है, ऐसा कवियों ने कहा है, परन्तु उनका यह कहना सत्य नहीं है । उन्होंने यह उपमा ठीक नहीं दी है क्योंकि मक्खन तो अपनी ही गर्मी या ताप से पिघलता है । परन्तु इसके विपरीत परम पवित्र संत पराये दुःख को देखकर द्रवीभूत हो जाते हैं । कहने का भाव यह है मक्खन में कोमलता अपने लिये है, दूसरे के परिताप से मक्खन में कोई विचार उत्पन्न नहीं होता । अतः वह नहीं पिघलता जब स्वयं अग्नि पर ताप लगता है तभी पिघलता है । अपने दुःख से दुःखी होना तो दुष्टों में भी है । अतः उसकी प्रशंसा ही क्या? परन्तु परम पवित्र संत दूसरों के दुःख सह नहीं सकते और व्याकुल हो जाते हैं । जैसे आचार्य सुदर्शन जी लिखते हैं–

संत दूसरों के ताप से पिघलता है । वह करुणा से भर जाता है ।
इसलिए मुझे संत बड़े प्रिय लगते हैं । संगीतमय रामकथा पृ० 638

भद्र आत्माओ !

प्रवचन नं. 2 गीताप्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. श्रीमद्भगवद्गीता के लेखक कौन थे और यह किस ग्रंथ का भाग है? इसमें कितने श्लोक हैं और किस-किस पात्र ने कितने कितने श्लोक बोले हैं?

उत्तर श्रीमद्भगवद्गीता के लेखक महर्षि वेदव्यास थे और महाभारत के भीष्म पर्व 25वें अध्याय से 42वें अध्याय तक जो 18 अध्याय हैं उन्हें ही श्रीमद्भगवद्गीता के नाम से पुकारा जाता है। इसमें 700 श्लोक हैं और किस पात्र ने कितने श्लोक बोले हैं उनका विवरण निम्नलिखित हैं–

	पात्र	श्लोक
(1)	धृतराष्ट	1
(2)	संजय	41.5
(3)	अर्जुन	83.5
(4)	श्रीकृष्ण	574
	कुल	**700 श्लोक**

प्रश्न 2. गीता में श्रीकृष्ण द्वारा प्रयुक्त 'मैं', 'मेरा', 'मुझे' आदि सर्वनामों के क्या अर्थ हैं?

उत्तर गीता में श्रीकृष्ण ने लगभग 300 बार 'मैं', 'मेरा', 'मुझे' आदि शब्दों का प्रयोग योगयुक्त अवस्था में अपने लिये न करके परमात्मतत्त्व का वर्णन किया है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे स्वयं परमात्मा थे या परमात्मा के अवतार थे जैसे वैष्णव भाई मानते हैं परन्तु वे महापुरुष थे जैसे गुरुदत्त लिखते हैं–

वहाँ श्रीकृष्ण ने कहा कि गीता का प्रवचन मैंने योगयुक्त अवस्था में किया था। उस समय मैं ऐसे कह रहा था जैसे मानो परमात्मा मुझ में बैठकर कह रहा हो। इस प्रकार जहाँ-जहाँ श्रीकृष्ण ने 'मैं', 'मेरा', 'मुझे' इत्यादि शब्द प्रयोग किए हैं, वहाँ उसका अभिप्राय परमात्मा का ही है। अतः मेरे परायण का अर्थ ईश्वर के परायण समझना चाहिए।

–श्रीमद्भगवद् गीता पृ० 56

प्रश्न 3. क्या गीता में कर्मयोग है या भक्तियोग है अथवा ज्ञानयोग है? अथवा यह एक समन्वयात्मक ग्रंथ है?

उत्तर गीता में कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग का सुन्दर समन्वय

हुआ है। पहले 6 अध्यायों में कर्मयोग का, दूसरे 6 अध्यायों में भक्तियोग का और तीसरे 6 अध्यायों में ज्ञानयोग का प्राधान्य है। मानव जीवन की यात्रा के लिये तीनों का समन्वय आवश्यक है। अतः गीता एक समन्वयात्मक ग्रंथ है। गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग व भक्तियोग के क्या अर्थ हैं? कर्मयोग का अर्थ है—शरीर को संसार की निष्काम सेवा में समर्पित करना। ज्ञानयोग का अर्थ है—आत्मा में स्वयं को समर्पित कर देना और भक्तियोग का अर्थ है स्वयं को मन से परमात्मा में समर्पित कर देना। इन तीनों के पूर्ण हो जाने पर अभिमान का नाश हो जाता है। क्योंकि अहंकार का गिरना ही आत्मसाक्षात्कार है। इसके विषय में डॉ० नरेन्द्र मदान लिखते हैं—

गीता में कर्म, भक्ति और ज्ञान की अलौकिक त्रिवेणी लहरा रही है। इसके पद-पद में अलौकिक अर्थ है। अनन्य भाव से इसका अध्ययन करने से मन के कपाट खुलते हैं।

इसी प्रकार योग ऋषि स्वामी रामदेव जी लिखते हैं—

गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, दिव्ययोग चारों ही हैं।

—श्रीमद्भगवद्गीता गीतामृत (पृ० 22)

अतः जगद्गुरु कृपालु जी महाराज लिखते हैं—

कर्म, ज्ञान अरु योग को जो भी फल श्रुति गाये।
अनायास बिनु माँगे, भगत सफल फल पाये।।

—भक्ति शतक (दोहा नं 64)

कर्म, ज्ञान और योग का जो भी फल शास्त्रों में बताया है वह सब बिना माँगे ही भक्ति से प्राप्त हो जाता है।

वस्तुतः कर्म के बिना ज्ञान असम्भव है। बिना ज्ञान के भक्ति अधूरी है और बिना भक्ति के ज्ञान लंगड़ा है। ये तीनों एक दूसरे के

पूरक हैं। अतः जीवन में सफलता की प्राप्ति के लिये तीनों का सुन्दर समन्वय आवश्यक है। परन्तु कर्म स्थूल अहंकार है और ज्ञान सूक्ष्म अहंकार है और भक्ति निहंकार है। अतः कर्म की अनाशक्ति से, ज्ञान की समता से, भक्ति के समर्पण से इच्छा की व्याकुलता से, श्रद्धा की सेवा से, शक्ति की परिश्रम से, तप की त्याग से और दान की उदारता से परख होती है। अतः प्रभु अनुभूति केवल अनन्य भक्ति से ही होती है।

प्रश्न 4. वह कौन सा वेदमंत्र है जिस पर सारी गीता आधारित है?

उत्तर यजुर्वेद के 40वें अध्याय के दूसरे मंत्र पर सारी गीता आधारित है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषच्छेतꣳसमाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

इस संसार में निष्काम कर्मों के करते हुए भी मनुष्य को सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिये। यही एक साधन है जिसके द्वारा तुझ मनुष्य में कर्म लिप्त नहीं होंगे। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी उपाय नहीं है।

प्रश्न 5. गीता का अपना ही घड़ा हुआ शब्द कौन-सा है? और उस शब्द का अर्थ विस्तार से बताएं।

उत्तर कर्मयोग (निष्काम कर्म) शब्द गीता का अपना घड़ा हुआ है। मनुष्य की वृत्तियाँ त्रिगुणात्मक होती हैं उनके आधार पर उसका चिन्तन भी निम्नलिखित तीन प्रकार का होता है–

(1) तमोगुणी मनुष्य का चिन्तन होगा कि फल मिलेगा तो कर्म करूँगा। यदि फल नहीं मिलेगा तो कर्म ही नहीं करूँगा।

(2) रजोगुणी मनुष्य का चिन्तन होगा कि कर्म तो करूँगा किन्तु इसका फल अवश्य मिलना चाहिये जो कि उससे हाथ में नहीं है।

(3) सतोगुणी मनुष्य का विचार होता है कि कर्म करूँगा परन्तु फल परमेश्वर की व्यापकता के अनुसार जो भी मिलेगा वह उसे स्वीकार करेगा। यही कर्मयोग है। इसके विषय में स्वामी विवेकानन्द लिखते हैं–

गीता का केन्द्रीयभाव है कि निरंतर कर्म करते रहो, परन्तु उसमें आसक्त मत रहो।

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज लिखते हैं–

मन में हरि, तन जगत् में, कर्मयोग ये हि जान।
तन हरि में मन जगत् में, यह महान् ज्ञान।।

–भक्ति शतक (दोहा 84)

योगऋषि रामदेव भी लिखते हैं–

कर्मयोग गीता का अपना ही घड़ा हुआ शब्द है। विश्व के चिन्तन को गीता की यह अपनी देन है। कर्मयोग की इसी देन के कारण गीता आज भी विश्व को वैसा ही नवीन संदेश दे रही है जैसा नवीन संदेश इससे कुरुक्षेत्र की रणभूमि में हथियार फेंक कर निराश खड़े हुए अर्जुन को दिया था।

–श्रीमद्भगवद्गीता गीतामृत (पृ० 76)

कर्मयोग का अर्थ कर्म का त्याग नहीं अपितु कर्त्तापन के अहंकार से मुक्त होकर भगवान् के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से कर्म को भगवान् की पूजा मानकर व स्वयं को निमित मात्र मानकर कार्य करना ही कर्मयोग है।

–जीवन दर्शन (पृ० 65)

प्रश्न 6. गीता के भक्ति, ज्ञान और कर्म शब्दों में क्या-क्या रहस्य छिपा है?

उत्तर कर्म – अहंकार = भक्ति

कर्म + अहंकार = ज्ञान

ज्ञान + भक्ति = कर्म

यद्यपि व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है परन्तु उस स्वतंत्रता में भी परमेश्वर की न्यायव्यवस्था रूपी परतंत्रता निहित है। अभिमान

एवं मोह माया की भावना से ग्रस्त मानव सदा अनेक प्रकार की चिन्ताओं में पड़ा रहता है ।

प्रश्न 7. गीता में कितने प्रकार के भक्तों का वर्णन है और कौन सा भक्त सर्वश्रेष्ठ भक्त माना गया है ?

उत्तर गीता में निम्नलिखित चार प्रकार के भक्तों का वर्णन है–

(1) आर्त्त – जो किसी दुःख के कारण परमात्मा से प्रार्थना करते हैं ।

(2) अर्थार्थी – जो धन एवं किसी स्वार्थपूर्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हैं ।

(3) जिज्ञासु – जो केवल ज्ञान प्राप्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हैं ।

(4) ज्ञानी – जो केवल प्रभु से निःस्वार्थ भाव से प्रार्थना करते हैं । क्योंकि उनकी कोई माँग नहीं होती । अतः वे ही प्रभु के सर्वश्रेष्ठ भक्त हैं ।

प्रश्न 8. दैवी सम्पदा एवं आसुरी सम्पदा में कौन-कौन से गुण एवं दोष आते हैं ?

उत्तर दैवी सम्पदा के गुण हैं–निडरता, मन की शुद्धता, दान देने की प्रवृत्ति, तप, त्याग आदि ।

आसुरी सम्पदा के दोष–पाखंड, क्रोध, कठोरता, अभिमान आदि ।

प्रश्न 9. गीता का श्रीगणेश एवं इति जिन-जिन शब्दों से हुई है और उनका क्या सार है ?

उत्तर गीता का श्रीगणेश 'धर्म' और 'इति' मम शब्दों से हुई है । इसका सार है कि मेरा क्या धर्म है । जैसे–

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ।। 1.1

कुरुक्षेत्र की धर्मभूमि पे जब,
मिले पाण्डवों से मेरे लाल सब ।
लड़ाई का दिल में जमाये ख़्याल,
तो संजय बता उनका सब हाल-चाल ।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
यत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। 18.78

जिधर हैं कृष्ण मेहरबाँ, योगेश्वर हैं ख़ुद जहाँ,
जिधर है साहिब-ए कमाँ, वो अर्जुन जैसा पहलवाँ।
वहीं है शादकामियाँ वहीं हैं खुश इन्तज़ामियाँ,
वहीं हैं कामरानियाँ, वहीं हैं शादमानियाँ।।

प्रश्न 10. गीता का सार क्या है?

उत्तर वेदों का सार उपनिषदें हैं, उपनिषदों का सार गीता है, गीता का सार गीता के अठारहवें अध्याय का 66वां श्लोक है और इस श्लोक का सार शरणागति है कि सब अधर्मों को छोड़ कर मेरी तरह परमात्मा की शरण में आ जा। जैसे एक हिन्दी कवि शब्दों में–

जाने क्या जादू भरा हुआ, भगवान् तुम्हारी गीता में,
श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में, भगवान् तुम्हारी गीता में,
मन चमन हमारा हरा हुआ, श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में।
जब शोक मोह से घिर जाए तब गीता वचन हृदय गावे,
युग-युग का अनुभव जुबड़ा हुआ, भगवान् तुम्हारी गीता में,
गीता संतों को प्यारी है, श्रुति वेदों के अनुसारी है,
सारा भवसागर तरा हुआ, श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में,
अर्जुन को जब भव मोह हुआ, तब गीता ज्ञान सुना डाला।
उपनिषद् का रस भरा हुआ, श्रीकृष्ण तुम्हारी गीता में।
मेरी गीता से अच्छा कोई ग्रंथ नहीं है।
सारे जहाँ में ऐसा कोई रत्न नहीं है।।
हमें नाज़ है गीता पे झूठी लगन नहीं है।
कही और शिक्षा दिल का अमन नहीं है।। –स्वामी गीतानंद
गीता की सूरत में श्याम नज़र आते हैं।
उसके हरेक श्लोक में उनके पैग़ाम नज़र आते हैं।। –स्वामी ज्ञानानंद

गीता के 10 अत्यंत महत्त्वपूर्ण श्लोकों की व्याख्या

1. **वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।**
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।। —2.22

बदलता है इन्साँ लिबास-ए-कुहन,
नया जामा करता है फिर ज़ेब-ए-तन ।
इसी तरह कालिब बदलती है रूह,
नये भेस में फिर निकलती है रूह ।।

शब्दार्थ— वासांसि—वस्त्र; जीर्णानि—फटे-पुराने; यथा—जैसे; विहाय—छोड़कर; नवानि—नये; गृह्णाति—ग्रहण करता है; नरः—मनुष्य; अपराणि—दूसरे; तथा—वैसे; शरीराणि—शरीर; विहाय—छोड़ कर; जीर्णानि—जीर्ण-शीर्ण; अन्यानि—अन्य; संयाति—प्राप्त करता है; नवानि—नये; देही—जीवात्मा ।

लिबास-ए कुहन—पुराने वस्त्र; जामा—वस्त्र; ज़ेब-ए तन—शरीर पर सुन्दर लगना; कालिब—शरीर; रूह—आत्मा ।

भावार्थ— जिस प्रकार व्यक्ति पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है ।

2. **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।**
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।। —2.23

कटेगी न तलवार से आत्मा,
जलेगी कहाँ आग से आत्मा ।
न गीली हो पानी लगाने से यह,
न सूखे हवा में सुखाने से यह ।।

शब्दार्थ— एनम्—इस आत्मा को; छिन्दन्ति—छेद सकते हैं; शस्त्राणि—शस्त्र; एनम्—इसको; दहति—जलाती है; पावकः—अग्नि; च—और; एनम्—इसको; क्लेदयन्ति—गीला कर सकते हैं; आपः—जल; शोषयति—सुखाता है; मारुतः—वायु ।

भावार्थ– इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, इसको आग जला नहीं सकती, इसको जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकता। क्योंकि यह आत्मा नित्य है। इसके विषय में स्वामी गीतानंद (वीर जी) ने कितना सुन्दर लिखा है–

अमर है आत्मा मेरी, क़ज़ा से मैं नहीं डरता।
मेरे आमाल अच्छे हैं ख़ुदा से मैं नहीं डरता।।

3. **जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।**
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।। –2.27

जो पैदा हो मौत उसको आये ज़रूर,
मरे तो जन्म फिर वो पाये जरूर।
जो यह अमर लाज़म है और नागज़ीर,
तो फिर किस लिये है तू ग़म का असीर।।

शब्दार्थ– जातस्य–जो जन्मा है उसकी; हि–निश्चय से; ध्रुवः–निश्चितः मृत्युः–मौत; ध्रुवम्–निश्चित है; जन्म–जन्म; मृतस्य–मरे हुए का; च–और; तस्मात्–इसलिये; अपरिहार्ये–जो टाला नहीं जा सकता; अर्थे–विषय में; त्वम्–तू; शोचितुम्–शोक के लिये; अर्हसि–उचित है।

लाज़म–ज़रूरी; नागज़ीर–अटल; असीर–ग्रस्त।

भावार्थ– इस मान्यता के अनुसार जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित् है और मरे हुए का जन्म निश्चित् है। अतः ऐसे अपरिहार्य कार्य के लिये शोक करना उचित नहीं है।

4. **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।। –2.47

तुझे काम करना है ओ मरदेकार,
नहीं उसके फल पर तुझे इख़्तियार।
किये जा अमल और न ढूंढ उसका फल,
अमल कर, अमल कर न हो बे-अमल।।

शब्दार्थ– कर्मणि–कर्म में; एव–ही; अधिकारः–अधिकार; ते–तेरा;

मा–मत; फलेषु–कर्म-फलों में; कदाचन–कभी; मा–मत; कर्मफलहेतुः–कर्म फल की इच्छा रखने वाला; भूः–हो; मा–मत; ते–तेरा; संग–प्रीति; अस्तु–हो; अकर्मणि–कर्म न करने में ।

मर्द-ए कार–ऐ कर्मवीर; बे-अमल–कर्मरहित ।

भावार्थ– तेरा कर्म करने में ही अधिकार है । अतः कर्म करते रहो और फल की इच्छा भी करो परन्तु फल पर अपना अधिकार न रखो क्योंकि कर्मफल किसी के हाथ में नहीं है । इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो ।

5. **विहाय कामान्यः सर्वान्पुमाँश्चरति निःस्पृहः ।**
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति –2.71

जो इन्साँ करे ख्वाइशें दिल से दूर,
हवस का न हो जिसके दिल में फ़तूर ।
न उसमें ख़ुदी हो न हो मेर-तेर,
सकूँ उसको हासिल हे दिल उसका सेर ।।

शब्दार्थ– विहाय–छोड़कर; कामान्–कामनाओं को; यः–जो; सर्वान्–सब; पुमान्–पुरुष; चरति–विचरता है; निःस्पृह–इच्छा रहित; निर्ममः–ममता से रहित; निरहंकारः–अहंकार से रहित; सः–वह; शान्तिम्–शान्ति को; अविगच्छति–प्राप्त होता है ।

खुदी–अहंकार; मेर-तेर–ममता; सेर–तृप्त ।

भावार्थ– जो व्यक्ति सारी इच्छाओं को त्यागकर ममतारहित, अहंकाररहित और इच्छारहित रहता है, वही वास्तविक शान्ति को प्राप्त होता है । जैसे जयशंकर प्रसाद जी ने अपने विश्वविख्यात महाकाव्य 'कामायनी' में लिखा है–

कर्म चक्र सा घूम रहा है,
यह गोपक बन नियति प्रेरणा ।
सबके पीछे लगी हुई है,
कोई व्याकुल नई एषणा ।।

6. **ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः।**
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।। —5.10

रहे बे-तअल्लुक करे जब अमल,
ख़ुदा ही की ख़ातिर करे सब अमल।
ख़ता से हमेशा रहेगा बरी,
कमल के न पत्ते पे ठहरे तरी।।

शब्दार्थ— ब्रह्मणि—ब्रह्म में; आधाय—अर्पण करके; कर्माणि—कर्मों को; संगम—आसक्ति को; त्यक्त्वा—त्याग कर; करोति—करता है; यः—जो; लिप्यते—लिप्त होता है; सः—वह; पापेन—पाप से; पद्मपत्रम्—कमल का पत्ता; इव—तरह; अम्भसा—जल के द्वारा।

बे-तअल्लुक—अनासक्त; खता—पाप; बरी—बचा हुआ, तरी—तरल पदार्थ।

भावार्थ —जो व्यक्ति आसक्ति को त्याग कर परमात्मा में अर्पण करके कर्म करता है वह व्यक्ति कमल के पत्ते की भाँति पाप से लिप्त नहीं होता है।

7. **गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्।**
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते।। —14.20

बदन का है तीनों गुणों पर मदार,
मकीन-ए बदन गर करे उनको पार।
वो चखता है अमृत वो पाता है सुख,
न जीना न मरना न पीरी न दुःख।।

शब्दार्थ —गुणान्—गुणों को; एतान्—इन; अतीत्य—लाँघ कर; त्रीन्—तीनों को; देही—आत्मा; देहसमुद्भवान्—देह से उत्पन्न; जन्ममृत्युजरादुःखैः—जन्म, मृत्यु और बुढ़ापा रूप दुःखों से; विमुक्तः—मुक्त हुआ; अमृतम्—अमरता को; अश्नुते—प्राप्त करता है।

मदार—आश्रय; मकीन-ए बदन—जीवात्मा; पीरी—बुढ़ापा।

भावार्थ– जब देहधारी आत्मा देह से उत्पन्न होने वाले इन तीन गुणों को लाँघ जाता है, तब वह जन्म-मरण, वृद्धावस्था के दुःखों से मुक्त हो जाता है और अमर जीवन को प्राप्त करता है ।

8. **मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।**
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ।। –14.25

न जिल्लत को परवाह न इ़ज़्ज़त की भूख,
करे दोस्त दुश्मन से यकसाँ सलूक ।
ग़रज़ त्याग दे मुझ पे सब कारोबार,
समझ लो गुणों से वो होता है पार ।।

शब्दार्थ –मानापमानयोः–मान और अपमान में; तुल्यः–समान रहने वाला; मित्रारिपक्षयोः–मित्र और शत्रुओं के पक्षों में; सर्वारम्भपरित्यागी–सर्व कर्मों के आरम्भों को त्यागने वाला; गुणातीतः–गुणातीत, गुणों को लाँघने वाला; सः–वह; उच्यते–कहा जाता है ।

जिल्लत–अपमान; यकसाँ–एक समान; सलूक–व्यवहार; ग़रज़–संक्षेपतः ।

भावार्थ – जो मान और अपमान में एक-समान रहता है, जो मित्र-पक्ष और शत्रु-पक्ष में समान भाव रखता है, जिसने समस्त कर्मों का त्याग कर दिया है, वह गुणातीत कहलाता है ।

9. **मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां मनस्कुरु ।**
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ।। –18.65

लगा मुझ में दिल भक्त हो जा मेरा,
तू कर यज्ञ मेरे सामने सर झुका ।
मुझे तुझ से मुझ से तुझे प्यार है,
मेरा वस्ल का तुझ से इकरार है ।।

शब्दार्थ –मन्मनाः–मुझ में लगाये हुए मन वाला; भव–हो; मद्भक्तः–मेरा

भक्त; मद्याजी–मेरा पूजक; माम्–मुझको ही; नमस्कुरु–नमस्कार कर; माम्–मुझको; एव–ही; एष्यसि–प्राप्त करेगा; सत्यम्–सच ही; ते–तुझसे; प्रतिजाने–प्रतिज्ञा करता हूँ; प्रियः–प्रिय; असि–तू है; मे–मेरा ।

वस्ल–दर्शन ।

भावार्थ – अपने को मुझ में लगा, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन कर, मुझे नमस्कार कर, ऐसा करने से तू मुझ तक पहुँच जाएगा । क्योंकि तू मेरा प्रिय है इसलिए मैं तुझे सचमुच इस बात का वचन देता हूँ ।

10. सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।। –18.66

तू सब अधर्म छोड़ और ले मेरी राह,
तू माँग आ के दामन में मेरे पनाह ।
तेरे पाप सब दूर कर दूँगा मैं,
न ग़मगीं हो मसरूर कर दूँगा मैं ।।

शब्दार्थ – सर्वधर्मान्–सब धर्मों को; परित्यज्य–छोड़कर; माम्–मुझको; एकम्–एक ही को; शरणम्–शरण में; व्रज–जा; अहम्–मैं; त्वा–तुझको; सर्वपापेभ्यः–सब पापों से; मोक्षयिष्यामि–छुड़ा दूँगा; मा–मत; शुचः–शोक कर ।

दामन–निकट; पनाह–शरण; ग़मगीं–शोक करना; मसरूर–आनन्दित ।

भावार्थ – सब अधर्मों को छोड़ कर तू केवल मेरी शरण में आ जा । तू दुःखी मत हो । प्रभुशरण से सुख, शांति और आनंद तो मिलता है परन्तु किये हुए कर्मों को अवश्य भोगना पड़ता है । जैसे जो कोई भी व्यक्ति कर्म करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है क्योंकि कर्मफल के भोगे बिना उससे छुटकारा नहीं । प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र है परन्तु उसके फल भोगने में ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार परतंत्र है । जैसे महर्षि वेद व्यास महाभारत में लिखते हैं–

अवश्यमेव भोक्तव्य कृतम् कर्म शुभाशुभम् ।

जो भी किसी भी व्यक्ति ने शुभ अथवा अशुभ कर्म किये हैं उनका फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ेगा ।

अतः प्रभुशरण से पापों से कभी भी मुक्ति नहीं हो सकती है । परन्तु किये हुये पापों पर पश्चाताप करने से भविष्य में पाप नहीं करेगा और पापों के सहन करने की शक्ति बढ़ जाती है । अतः मानव को सारे कर्मों के फल को प्रभु पर छोड़ देना चाहिये क्योंकि कर्मफल देना ईश्वर के अधीन है इसलिये सदा उसकी चरण-शरण ही रहना चाहिये । यही गीता का सार है ।

इसके अतिरिक्त आज तक विभिन्न आर्य समाजों और अन्य स्थानों पर जितने भी मैंने प्रवचन दिये हैं न तो मैंने कभी बस/कार का किराया लिया है और न ही किसी प्रकार की दक्षिणा । जैसे कई वर्ष पूर्व आर्य समाज सैक्टर 22ए, चण्डीगढ़ में मेरा प्रवचन हुआ । सारे श्रोतागण एवं अधिकारीगण बहुत ही प्रभावित हुये । मुझे याद है कि उस समय श्री बलबीर सिंह चौहान मंत्री थे । उन्होंने पहले तो मुझे हलवा और दूध दिया जिसे मैंने स्वीकार कर लिया । परन्तु बाद में जब वे एक लिफाफे में दक्षिणा देने लगे तो मैंने उनसे कहा—

आर्य समाज मेरी माता है और महर्षि दयानंद मेरे धार्मिक पिता है । अतः मैं इनसे कभी भी दक्षिणा नहीं ले सकता ।

यह सुनकर श्री बलबीर सिंह चौहान मंत्री मेरे व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अत्यधिक प्रभावित हुए ।

14. विभिन्न ग्रंथों की रचना

मैं सन् 1957 ई० से निरंतर लेखन कार्य कर रहा हूँ । इस लम्बे काल में मैंने अनेक ग्रंथों की रचना की है इन में से कुछ पुस्तकें प्रकाशित करवा कर

निःशुल्क वितरित की जा चुकी हैं तथा कुछ अप्रकाशित पुस्तकें हैं जिन्हें छपवाने की प्रयास किया जा रहा है ।

प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकें

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?
16. शेंर-ओ-शायरी

अप्रकाशित पुस्तकें

1. वैदिक मनुस्मृति
2. वैदिक उपनिषद्वाणी
3. वैदिक दर्शनवाणी
4. वैदिक महाभारत
5. वैदिक गीता
6. अमर धर्मग्रंथ
7. अमर नीतिग्रंथ
8. पुराणपरिचय
9. ईश्वरसिद्धि
10. राष्ट्रभाषा हिन्दी

11. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
12. महावीर हनुमान
13. योगिराज श्रीकृष्ण
14. आदिशंकराचार्य
15. आचार्य चाणक्य
16. दस गुरु
17. आर्यसमाज के महामानव
18. स्वामी रामतीर्थ
19. संस्कार
20. गीतांजलि
21. आर्यसमाज
22. ओ३म्
23. गायत्रीरहस्य
24. ज्ञानामृत
25. यज्ञ
26. संत
27. संतवाणी
28. आत्मकथा
29. भर्तृहरि शतक
30. सामान्य हिन्दी (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
31. Great Thoughts
32. General English (Part I to V)
    (For All Classes)
33. ब्रह्मचर्य
34. गृहस्थ

मैंने सन् 2002 ई० में पुस्तकें छपवाने का कार्य आरम्भ किया था और मेरी सर्वप्रथम पुस्तक छपी थी ''रामचरितमानससार'' ।

इसके अतिरिक्त 17.1.2018 ई. से मेरी निम्नलिखित 35 पुस्तकें इंटरनैट पर आ चुकी हैं और पाठकगण उन्हें भी पढ़ सकते हैं । या लोड कर सकते हैं । ये सभी पुस्तकें www.dpkapoorbooks.co.in पर उपलब्ध हैं ।

1. अमृतवाणी
2. आर्यसमाज
3. आर्यसमाज के महामानव
4. आदिशंकराचार्य
5. आचार्य चाणक्य
6. अमर नीतिग्रंथ
7. अमर धर्मग्रंथ
8. दस गुरु
9. ईश्वरसिद्धि
10. गायत्रीरहस्य
11. ज्ञानामृत
12. गीतांजलि
13. क्या आप जानते हैं ?
14. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
15. महावीर हनुमान
16. महर्षि दयानंद
17. ओ३म्
18. पुराणपरिचय
19. राष्ट्रभाषा हिन्दी
20. संस्कार
21. संत
22. संतवाणी
23. स्वामी विवेकानंद
24. स्वामी रामतीर्थ
25. शरणागति
26. शेर-ओ-शायरी
27. सामान्य हिन्दी
    (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
28. वैदिकसाहित्य
29. वैदिक उपनिषद्वाणी
30. वैदिक दर्शनवाणी
31. वैदिक रामायण
32. वैदिक महाभारत
33. वैदिक गीता
34. योगिराज श्रीकृष्ण
35. यज्ञ
36. आत्मकथा
37. भर्तृहरिशतक
38. ब्रह्मचर्य
39. गृहस्थ
40. वैदिक मनुस्मृति
41. Great Thoughts
42. General English
    (Part I to V)
    (For All Classes)

15. वैदिक प्रचार हेतु ग्रंथों का निःशुल्क वितरण

मैं सन् 2002 ई० से लगातार ऊपरलिखित ग्रंथों का अपने खर्चे पर छपवाकर भारत के मुख्य पुस्तकालयों, मुख्य आर्य समाजों में कोरियर द्वारा वितरण कर रहा हूँ। इससे वेदप्रचार का कार्य बहुत अच्छा हो रहा है। मेरी सभी पुस्तकों को पाठकगण ने बहुत पसंद किया हैं इसके लिये भी मेरे वर्ष में हज़ारों रुपये व्यय हो जाते हैं।

16. भाइयों और निर्धनों की सहायता

क्या मार सकेगी मौत उसे औरों के लिए जो जीता है।
मिलता है जहाँ का प्यार उसे औरों के जो आँसू पीता है।।

आरम्भ से ही मैं अपने बंधु-बांधवों और निर्धनों की आर्थिक रूप से सहायता करता आ रहा हूँ। मैं अपने छोटे भाइयों सुरेन्द्र कुमार कपूर और जयप्रकाश कपूर को 2000 रुपये प्रतिमास भेजता हूँ। इसके अतिरिक्त आपातकाल में भी उनकी आर्थिक सहायता करता हूँ। मैं श्रीमती राम दुलारी जो कई वर्षों से मेरे यहाँ काम करती है आपातकाल में उसकी भी आर्थिक सहायता करता हूँ तथा काम करने वाले माली श्री शिवभजन यादव की भी आपातकाल में आर्थिक सहायता करता हूँ। कभी-कभी निर्धनों और असहायों को निःशुल्क औषधियाँ भी दिलवा दिया करता हूँ। वस्तुतः संसार में चार प्रकार के व्यक्ति रहते हैं–

(1) दौलतबंद – दौलतबंद वे होते हैं जो बहुत कंजूस होते हैं। न स्वयं खाते हैं और न किसी और को खाने को देते हैं। इनकी संख्या बहुत कम होती है।

(2) दौलतगंद – ऐसे व्यक्ति धन को शराब, व्याभिचार, जुआ आदि में नष्ट करते हैं। ऐसे व्यक्तियों की संख्या भी बहुत कम होती है।

(3) दौलतमंद – ऐसे व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ के लिये ही धन का व्यय करते हैं। जैसे स्वयं पर और अपने परिवार के पालनपोषण पर। ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है।

(4) दौलतचंद – ऐसे व्यक्ति अपने लिए भी धन का खर्च करते हैं और अपने धन का कुछ भाग परोपकार में भी खर्च करते हैं। ऐसे व्यक्तियों की संख्या भी कम होती हैं।

पाठकगण अब आप ही बताइए कि आप कौन सी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक वर्ष मेरी आय का लगभग 25% भाग दान व निर्धनों की सहायतार्थ चला जाता है। मैं तो केवल एक साधन मात्र हूँ। परोपकार का कार्य तो प्रभु कृपा से ही हो रहा है। जैसे रहीम जी लिखते हैं–

देनहार कोउ और है देत रहत दिन रैन।
लोग भरम मुझपे करैं, याते नीचे नैन।।

17. दिनचर्या

विगत 60 वर्षों से मैं सुबह 4 बजे ब्रह्ममहूर्त में जाग जाता हूँ। मैं उठते ही ओ३म् का उच्चारण करके प्रभु का धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझे जीवन का एक और नया दिन दिखाया। इसके पश्चात् मैं नींबू पानी पीकर आसन और प्राणायाम अपनी शक्ति के अनुसार करता हूँ। फिर जोर-जोर से ओ३म् जोकि मेरा इष्ट है का उच्चारण 6 मिनट तक करता हूँ। ऐसा करने से मेरे कई रोग ठीक हो गये हैं। फिर मैं 5 बादाम और एक अखरोट जो मैं रात को पानी में भिगोकर रखता हूँ का सेवन करता हूँ। इसके बाद तुलसी चाय पीता हूँ। स्नान करके दीप जला कर प्रतिदिन निम्नलिखित दैनिक प्रार्थना करता हूँ, याचना नहीं। क्योंकि प्रभु भक्त तो प्रभु की प्रार्थना ही करता है

याचना तो भिखारी करता है । प्रार्थना में प्रभु का धन्यवाद किया जाता है और याचना में केवल मांगा जाता है ।

दैनिक प्रार्थना

1. **ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।**
   धियो यो नः प्रचोदयात् । । यजुर्वेद 36.3

   हे प्रभु ! आप सर्वरक्षक, प्राणाधार, सुखस्वरूप, दुःखनाशक, सत्-चित्-आनंद स्वरूप हैं । आप ही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वेदज्ञानदाता एवं कर्मफलदाता हैं । हम आपके प्रेरणादायक, शुद्धस्वरूप, वरणीय, परमपवित्र, दिव्यस्वरूप का हृदय मंदिर में ध्यान धरते हैं । आप हमारी बुद्धियों को कृपया श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रेरित कीजिए ।

2. **ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्नऽआ सुव । ।**

   यजुर्वेद 30.3

   हे प्रभु ! आप कृपया हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वे हमें प्राप्त कराइए ।

3. **ओ३म् असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति ।**

   बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28

   हे प्रभु ! मुझे झूठ से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

4. **त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।**
   त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव । ।

   पांडवगीता श्लोक 28

   हे प्रभु ! आप ही मेरे माता-पिता हो, आप ही मेरे बन्धु-बांधव हो । आप

ही मेरी विद्या और धन सम्पत्ति हो । आप ही मेरे सब कुछ हो ।

5. **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।**

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् । ।

हे प्रभु ! सब सुखी हों, सब स्वस्थ और निरोग हों, सब का कल्याण हो और कोई भी प्राणी दुःखी न हो ।

6. हे प्रभु ! मेरा आज का यह दिन सब से शुभ दिन हो । मैं ऐसा कोई भी कार्य न करूँ जिससे किसी का अहित हो । मेरा यह जीवन न केवल मेरे लिये अपितु मेरे सुखी परिवार, सुन्दर समाज, प्रिय राष्ट्र एवं सारे संसार के लिये कल्याणकारी हो ।

ओ३म् शांति ! शांति ! ! शांति ! ! !

प्रार्थना उपरांत कुछ फलों का सेवन कर लेता हूँ । इसके बाद समाचार पत्र पढ़ता हूँ तथा स्वाध्याय एवं लेखन कार्य में लग जाता हूँ । स्वाध्याय और लेखन का शौक़ मुझे बचपन से ही है । यह मेरा शौक़ है न कि व्यवसाय । जैसेकि बी.डी. कालिया 'हमदम' लिखते हैं–

अदब से क्या मिला 'हमदम' न पूछो ।

यह मेरा शौक़ है, पेशा नहीं है । ।

वस्तुतः मैंने चारों वेदों, 108 उपनिषदों, छः शास्त्रों, रामायण, गीता, बाइबल, क़ुरान, श्रीगुरुग्रंथसाहित्य, सत्यार्थप्रकाश, मनुस्मृति, 18 पुराणों आदि का केवल गंभीर अध्ययन एवं अनुशीलन ही नहीं किया अपितु इन ग्रंथों पर विभिन्न लेखकों का भाष्य पढ़कर इन पर कलम भी चलाई है । मैंने इन सब ग्रंथों पर धाराप्रवाह प्रवचन भी किया है । मैंने विगत अनेक वर्षों से ही अच्छी एवं धार्मिक पुस्तकों को अपना मित्र बना रखा है क्योंकि मित्र तो हमें धोखा भी दे सकते हैं परन्तु अच्छी पुस्तकें हमें कभी भी छोड़कर नहीं जा सकती है । जब तक हमारा जीवन है और हम किसी धार्मिक ग्रंथ का

अध्ययन एवं अनुशीलन करते हैं तो हम उसके लेखक से वार्तालाप कर रहे होता है। इन पुस्तक ने मेरे जीवन को बदल कर रख दिया है और ये पुस्तकें मेरे लिये कामधेनु एवं कल्पतरु के समान हैं। क्योंकि अच्छी ज्ञानवर्धक पुस्तकों का मानव जीवन में अत्यधिक महत्त्व एवं लाभ होता है। जैसे आचार्य चन्द्र शेखर जी लिखते हैं –

जानकारी की भूख मिटाती हैं किताबें
कुतूहल की प्यास बुझाती हैं किताबें
हम अपने बलबूते खड़े हो सकें
हमें इस काबिल बनाती हैं किताबें

लगभग 12 बजे मैं दो चपाती जो कि स्वयं ही बनाता हूँ, एक सब्जी या दाल, दही और सलाद के साथ शाकाहारी भोजन लेता हूँ। मैं सारे दिन में केवल एक ही बार भोजन लेता हूँ। क्योंकि मेरा विचार है कि अधिकतर व्यक्ति आवश्यकता से अधिक भोजन करते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। अतः पाठकों से भी अनुरोध हे कि यदि वे स्वस्थ रहना चाहते हैं तो भोजन को आधा, व्यायाम को दुगुना, पानी तीगुना और हँसना चार गुना करें। अतः जीवन में हँसे और हँसायें।

भोजन के पश्चात् मैं फिर 6 मिनट तक जोर जोर से ओ३म् का उच्चारण करता हूँ। इसके उपरांत टेलीविजन पर समाचार सुनकर पुनः अध्ययन एवं लेखन के कार्य में लग जाता हूँ। शाम को सैर को निकल जाता हूँ। 6 बजे वापिस आने पर 8 बजे तक स्वाध्याय और लेखन के कार्य में लग जाता हूँ अथवा कभी-कभी टेलिविजन पर कोई धार्मिक कार्यक्रम भी देख लेता हूँ। वस्तुतः स्वाध्याय के समय मेरी लगन के कारण एक प्रकार से समाधि लग जाती है। इससे मुझे आनन्दानुभूति होती है। रात्रि 8 बजे सोने से पूर्व फिर मैं ओ३म् का उच्चारण करता हुआ गाढ़ निद्रा में चला जाता हूँ।

इस प्रकार मैं इसे स्वीकार करता हूँ कि यह सब प्रभुकृपा और संत महात्माओं और बड़ों के आशीर्वाद से ही हो रहा है। क्योंकि इन्हीं से ही मुझे ऐसा करने की प्रेरणा मिली है। मैं प्रभु के प्रति सम्पूर्ण समर्पित हूँ। वह जो भी भविष्य में करेगा अच्छा ही करेगा और वही मेरे कल्याण में होगा। मैं मोहमाया से मुक्त, आत्मतृप्त एवं सन्तुष्ट व्यक्ति हूँ। मैं ऐसा समझता हूँ कि व्यक्ति चरित्र एवं व्यवहार से ही महान् बनता है न कि वंश एवं धन से। जैसेकि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह "दिनकर" लिखते हैं–

बड़े वंश से क्या होता है खोटे हों यदि काम?
नर का गुण उज्ज्वल चरित्र है नहीं धनधाम।। –रश्मिरथी

इसी प्रकार एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

निर्धन धनवान् से डरता है
निर्बल बलवान् से डरता है
मूर्ख विद्वान् से डरता है
परन्तु चरित्रवान् से ये तीनों डरते हैं।

वस्तुतः संतोश, शान्ति, प्रसन्नता, समृद्धि, वैभव भीतर की वस्तुएं हैं न कि बाहर की। अतः मेरी सोच सकारात्मक है न कि नकारात्मक। अतः मैं जीवन के प्रति आशावादी हूँ और अपना भविष्य उज्ज्वल देखना चाहता हूँ जैसे मुनि श्री तरुण सागर जी लिखते हैं–

आदमी केवल दिमाग़ की नस फटने और दिल की धड़कन रुकने से ही नहीं मरता बल्कि उस दिन भी मर जाता है जिस दिन उसके सपने मर जाते हैं, उसकी उम्मीदें मर जाती हैं और फिर मरा हुआ आदमी दोबारा नहीं मरता। आदमी अपने सपनों और अपनी उम्मीदों से जिंदा है।

मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि प्राप्त ही पर्याप्त है। यहाँ तक कि मैंने अपने मन

को अपना शिष्य बनाया हुआ है न कि गुरु। जैसे कि साधारण लोग मन के पीछे भागते फिरते हैं। इसी कारण मेरा आज तक एकान्त भी पवित्र है। मैं मन, वचन और कर्म से प्रभु कृपा से एक समान रहना चाहता हूँ। स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, लेखन, एकांतवाद आदि मेरे प्रिय विषय हैं। अतः मैं निम्न पंक्तियों से अपनी आत्मकथा नामक पुस्तक का समापन करता हूँ।

मेरा नाथ तू है, मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।।
मेरा इष्ट तू है मेरा तेरा पुजारी।
तेरा खेल मैं हूँ, तू मेरा खिलाड़ी।।

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?
16. शेर-ओ-शायरी

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. वैदिक मनुस्मृति
2. वैदिक उपनिषद्वाणी
2. वैदिक दर्शनवाणी
3. वैदिक महाभारत
5. वैदिक गीता
6. अमर धर्मग्रंथ
7. अमर नीतिग्रंथ
8. पुराणपरिचय
9. ईश्वरसिद्धि
10. राष्ट्रभाषा हिन्दी
11. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
12. महावीर हनुमान
13. योगिराज श्रीकृष्ण
14. आदिशंकराचार्य
15. आचार्य चाणक्य
16. दस गुरु
17. आर्यसमाज के महामानव
18. स्वामी रामतीर्थ
19. संस्कार
20. गीतांजलि
21. आर्यसमाज
22. ओ३म्
23. गायत्रीरहस्य
24. ज्ञानामृत
25. यज्ञ
26. संत
27. संतवाणी
28. आत्मकथा
29. भतृहरि शतक
30. सामान्य हिन्दी (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
31. **Great Thoughts**
32. **General English**
    (Part I to V)
    (For All Classes)
33. ब्रह्मचर्य
34. गृहस्थ

कृपया पाठकगण इस ओर भी ध्यान दें कि इनकी निम्नलिखित पुस्तकों को इनकी वैब साईट **www.dpkapoorbooks.co.in** पर भी देखा जा सकता है।

1. अमृतवाणी
2. आर्यसमाज
3. आर्यसमाज के महामानव
4. आदिशंकराचार्य
5. आचार्य चाणक्य
6. अमर नीतिग्रंथ
7. अमर धर्मग्रंथ
8. दस गुरु
9. ईश्वरसिद्धि
10. गायत्रीरहस्य
11. ज्ञानामृत
12. गीतांजलि
13. क्या आप जानते हैं ?
14. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
15. महावीर हनुमान
16. महर्षि दयानंद
17. ओ३म्
18. पुराणपरिचय
19. राष्ट्रभाषा हिन्दी
20. संस्कार
21. संत
22. संतवाणी
23. स्वामी विवेकानंद
24. स्वामी रामतीर्थ
25. शरणागति
26. शेर-ओ-शायरी
27. सामान्य हिन्दी
    (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
28. वैदिकसाहित्य
29. वैदिक उपनिषद्वाणी
30. वैदिक दर्शनवाणी
31. वैदिक रामायण
32. वैदिक महाभारत
33. वैदिक गीता
34. योगिराज श्रीकृष्ण
35. यज्ञ
36. आत्मकथा
37. भर्तृहरिशतक
38. ब्रह्मचर्य
39. गृहस्थ
40. वैदिक मनुस्मृति
41. **Great Thoughts**
42. **General English**
    (Part I to V)
    (For All Classes)